सतना
27 जून 2025 शुक्रवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर
सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

सूर्यकुमार यादव की...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

मध्य अफ्रीकी गणराज्य के स्कूल में भीषण विस्फोट के बाद मची भगदड़

बांगुई (एजेंसी)। मध्य अफ्रीकी गणराज्य की राजधानी बांगुई के एक उच्च विद्यालय में बुधवार को हुए विस्फोट और उसके बाद मची भगदड़ ने दर्दनाक त्रासदी का रूप ले लिया। इस घटना में 29 स्कूली छात्रों की मौत हो गई, जबकि 250 से अधिक लोग घायल हुए हैं। यह जानकारी शिक्षा और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा गुरुवार को जारी की गई। यह हादसा बार्थेलेमी बोगांडा उच्च विद्यालय में उस समय हुआ जब परिसर में लगे एक विद्युत

ट्रांसफार्मर की मरम्मत के बाद उसमें फिर से बिजली आपूर्ति बहाल की जा रही थी। मरम्मत के दौरान ही भीषण विस्फोट हो गया। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, विस्फोट के बाद मची भगदड़ में 16 छात्राओं समेत अधिकांश लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कुछ अन्य ने अस्पताल में दम तोड़ा। 250 से अधिक घायलों का इलाज शहर के विभिन्न अस्पतालों में चल रहा है। घटना के समय विद्यालय में करीब 5,000 छात्र परीक्षा देने के लिए मौजूद थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, परीक्षा के बीच अचानक तेज धमाके की आवाज आई, जिससे अफरा-तफरी मच गई। छात्र एल्विन यालिगाओ ने बताया, ÷इमारत हिलने लगी, हर कोई घबरा गया। लोग जान बचाने के लिए दौड़ने लगे।

अपने ही देश के बच्चों पर अत्याचार कर रहा आतंक पोषक पाकिस्तान

संयुक्त राष्ट्र (एजेंसी)। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान द्वारा भारत पर लगाए गए ÷अनुचित और राजनीतिक रूप से प्रेरित÷ आरोपों को कड़े शब्दों में खारिज कर दिया है। भारत ने कहा कि पाकिस्तान बच्चों के खिलाफ अत्याचारों और सीमा पार आतंकवाद से दुनिया का ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन दुनिया 22 अप्रैल के पहलगाम आतंकी हमले को भूली नहीं है, जिसमें पाकिस्तान

समर्थित आतंकवादियों ने निर्दोष पर्यटकों की जान ली थी। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि राजदूत पी. हरीश ने यह बात ÷बच्चों के खिलाफ गंभीर उल्लंघनों को समाप्त करने और रोकने के लिए प्रभावी रणनीति÷ विषय पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की खुली बहस में कही। राजदूत हरीश ने कहा, ÷पाकिस्तान न सिर्फ बच्चों के अधिकारों का हनन कर रहा है, बल्कि संयुक्त राष्ट्र की प्रक्रियाओं का दुरुपयोग कर भारत को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान खुद ष्टट्ट (बच्चों और सशस्त्र संघर्ष) के गंभीर उल्लंघनकर्ताओं में से एक है और संयुक्त राष्ट्र महासचिव की हालिया रिपोर्ट में इसकी पुष्टि की गई है। रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान में बच्चों के खिलाफ 99 गंभीर उल्लंघनों के मामले दर्ज हुए हैं, जिनमें 86 बच्चे (27 लड़के, 14 लड़कियां, 45 अज्ञात लिंग) पीड़ित हैं। 13 मामलों में स्कूलों पर हमले किए गए, खासतौर से लड़कियों के स्कूलों को निशाना बनाया गया।

दिल्ली में जल बोर्ड की बड़ी लापरवाही, जामिया मेट्रो स्टेशन के पास गड्ढे में गिरा ऑटो, तीन लोग घायल

बरेली (एजेंसी)। दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया मेट्रो स्टेशन के करीब आज एक ऑटो दिल्ली जल बोर्ड की लापरवाही की वजह से एक बड़े गड्ढे में गिर गया, जिसकी वजह से ऑटो में बैठे लोग भी घायल हो गए। दरअसल इस इलाके में लंबे वक्त से दिल्ली जल बोर्ड के द्वारा काम कराया जा रहा है, जिसकी वजह से जामिया मेट्रो से बटला हॉउस की तरफ जाने वाले रास्ते की सड़क को खोदा गया है। दिल्ली जल बोर्ड ने यहां एक बड़ा गड्ढा बनाया हुआ है, जिसमें आज शाम एक ऑटो सीधा आकर गिर गया। ऑटो में एक बच्चा और 2 महिलाएं बैठी थीं। गड्ढे में ऑटो के गिरने की वजह से बच्चे और दोनों महिलाएं घायल हो गईं। इसके बाद आनन-फानन में घायल को अस्पताल ले जाया गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस गड्ढे के बाहर ना तो कोई बैरिकेड लगा है और ना ही कोई जानकारी लिखी गई है। केवल गड्ढा खोदकर खुला छोड़ दिया गया है। हालांकि जब यह हादसा हुआ, उसके तुरंत बाद दिल्ली जल बोर्ड हरकत में आ गया और आनन-फानन में जेसीबी को लाकर इस गड्ढे को भरने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई। बता दें कि बीच सड़क पर गड्ढा खोदे जाने की वजह से लोगों को भारी ट्रैफिक जाम का भी सामना करना पड़ रहा है। इस कारण आए दिन कई विवाद और रोड रेज जैसे मामले भी देखने को मिलते हैं।

विदेश मंत्रालय ने कई मुद्दों पर दी अहम जानकारी

SCO समिट में आतंकवाद पर क्यों नहीं बना जॉइंट स्टेटमेंट?

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने शंघाई सहयोग संगठन की रक्षा मंत्रियों की बैठक, अमेरिका द्वारा जारी एडवाइजरी और इजरायल-ईरान संघर्ष क्षेत्र से भारतीय नागरिकों की निकासी पर जानकारी दी। रणधीर जायसवाल ने बताया कि रक्षा मंत्री ने 25 और 26 जून को स्ष्टह्र रक्षा मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। एक देश को हमारे आतंकवाद स्टैंड पर असहमति थी, जिसकी वजह से जॉइंट स्टेटमेंट नहीं हो पाया। हमने अपने स्टेटमेंट में आतंकवाद पर अपना पक्ष रखा। अमेरिका द्वारा भारत के लिए जारी नई यात्रा सलाह पर जायसवाल ने कहा कि ऐसी सलाह समय-समय पर जारी की जाती है। उन्होंने पुष्टि की कि भारत लंबे समय से लेवल 2 पर है और इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है।

वहीं, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने ऑपरेशन सिंधु की सफलता के लिए कई देशों को धन्यवाद दिया, जिसे 18 जून को शुरू किया

गया था। उन्होंने विशेष रूप से ईरान सरकार का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने भारतीय मूल के लोगों को निकालने के लिए अपना हवाई क्षेत्र खोला। इसके अलावा, तुर्कमेनिस्तान, जॉर्डन और मिस्त्र सरकार को भी उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया।

ईरान और इजरायल से वापस आए भारतीय उन्होंने कहा कि 40,000 भारतीय मूल के लोग इजरायल में हैं। 3426 भारतीय मूल के लोगों को अब तक निकाला गया है। निकाले गए लोगों में 11 ओसीआई (ह्रष्टढ्ढ) धारक, 9 नेपाली मूल के लोग, 4 श्रीलंकाई और 1 ईरानी नागरिक (जिनकी पत्नी भारतीय मूल की हैं) शामिल हैं। कुल 15 उड़ानों के माध्यम से नागरिकों को वापस लाया जाएगा, जिनमें से 14 उड़ानें पहले ही आ चुकी हैं और 1 उड़ान आर्मेनिया से आ रही है। इजरायल का हवाई क्षेत्र बंद होने के कारण 818 भारतीय मूल के लोगों को 4 उड़ानों में जॉर्डन और मिस्त्र के रास्ते भारत लाया गया।

पटना में पुलिसकर्मियों को कुचलने की कोशिश नाकाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के पटना से आज एक नाटकीय सीसीटीवी वीडियो सामने आया। इस वीडियो में एक काले रंग की थार कार, नियमित वाहन जांच के दौरान पुलिसकर्मियों को कुचलने की कोशिश करती दिखी। बता दें कि 24 जून की दोपहर गर्दनीबाग पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले चितकोहरा इलाके में यह घटना घटी। अधिकारियों के मुताबिक, पुलिसकर्मियों ने थार की

चेकिंग के लिए ड्राइवर को रुकने का इशारा किया। लेकिन कार चालक नहीं रुका और उसने गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दी। इसके बाद पुलिसकर्मियों को टक्कर मारती हुई गाड़ी वहां से निकल गई। हालांकि जैसे-तैसे कर पुलिसकर्मियों ने कूदकर अपनी जान बचाई। जैसे ही एसयूवी वहां से भागी तो पुलिसकर्मियों ने मोबाइल से कार के रजिस्ट्रेशन नंबर की तस्वीर लेने की कोशिश की लेकिन इसमें वो असफल रहे। इसके बाद आरोपी कार चालक गर्दनीबाग की ओर भाग गया। इसके तुरंत बाद पुलिस द्वारा अलर्ट जारी किया गया। अलर्ट मिलते ही पुलिस कंट्रोल रूम से एक फ्लैश मैसेज जारी किया गया, जिसके बाद गर्दनीबाग, सचिवालय, जक्कनपुर और कोतवाली समेत कई पुलिस स्टेशनों ने मिलकर तलाशी अभियान शुरू किया और वाहन को पकड़ने के लिए चेकप्वाइंट्स बनाएं।

कमिश्नर ऑफिस से कटहल चुराने पेड़ पर चढ़ा नशे में धुत युवक

50 फीट ऊंचे से गिरा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में अली असगर रोड पर स्थित एंबेसी अपार्टमेंट में कमिश्नर कार्यालय के पास एक नाटकीय बचाव अभियान देखने को मिला, जहां कथित तौर पर नशे में धुत एक युवक कटहल चुराने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया। एक सुरक्षा गार्ड ने जब उसे देखा और उससे पूछताछ की, तो युवक घबरा गया और भागने की कोशिश में एक टहनी से खतरनाक तरीके से गिर गया। पुलिस और स्थानीय लोग घटनास्थल पर पहुंचे और उसे तिरपाल की मदद से बचाने की

कोशिश की। उनके प्रयासों के बावजूद, वह 50 फीट से अधिक की ऊंचाई से गिर गया, जिससे उसके कूल्हे में गंभीर चोटें आईं। घायल युवक को पुलिस ने तुरंत बॉवरिंग अस्पताल पहुंचाया। एक अन्य खबर में, बेंगलुरु के एक वृद्धाश्रम में बुधवार को एक बुजुर्ग दंपति फंदे से लटके पाए गए। पुलिस ने जानकारी दी किमृतकों की पहचान कृष्णमूर्ति (81) और उनकी पत्नी राधा (74) के रूप में हुई है। प्रारंभिक जांच में आत्महत्या की बात सामने आई है, हालांकि पुलिस सभी पहलू से घटना की जांच कर रही है। पुलिस ने बताया कि दंपति इससे पहले 2021 में ब्यातारायणपुरा स्थित एक वृद्धाश्रम में रहे थे, लेकिन 2023 में अपने बेटे के पास रहने के लिए लौट आए। उन्हें हाल ही में जेपी नगर स्थित वृद्धाश्रम में रहने के लिए भेज दिया गया था, जहां यह घटना हुई। पुलिस के अनुसार, मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच की जा रही है।

रूस के निजी दौरे पर शशि थरूर

प्रिमाकोव रीडिंग्स क्या है, जहां विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव से की मुलाकात

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर अपनी किताबों पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री सीरीज़ के प्रचार के लिए रूस के निजी दौरे पर गए हैं। उन्होंने इस दौरे पर मॉस्को में बुधवार को आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव से मुलाकात की। शशि थरूर अपनी किताबें- %एन एरा ऑफ डार्कनेस~द ब्रिटिश एम्पायरर% और 'इंडिया~फ्रॉम मिडनाइट टू द मिलेनियम एंड बियॉन्ड' पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री सीरीज के प्रमोशन के लिए रूस के सरकारी टेलीविजन नेटवर्क आरटी के न्योता पर मॉस्को पहुंचे हैं। उनकी किताब में ब्रिटिश शासन से भारत पर पड़े असर और उसकी दमनकारी नीतियों के बारें में बताया गया है।

रूसी विदेश मंत्री लावरोव से मुलाकात की तस्वीर ङ्ग पर पोस्ट करते हुए शशि थरूर ने लिखा, ÷मॉस्को में %प्रिमाकोव रीडिंग्स% के दौरान पुराने दोस्त सर्गेई लावरोव से मिलकर खुशी हुई।÷ प्रिमाकोव रीडिंग्स एक ग्लोबल एनुअल प्लेटफॉर्म है, जहां इंटरनेशनल रिलेशंस और वर्ल्ड इकोनॉमी पर चर्चा की जाती है। इस सालाना मीटिंग में

भारत समेत 40 देशों के एक्सपर्ट हिस्सा ले रहे हैं। इस प्लेटफॉर्म का नाम रूस के पूर्व प्रधानमंत्री मंत्री येवगेनी प्रिमाकोव के नाम पर रखा गया है।

हर साल इस कार्यक्रम का आयोजन इंस्टीट्यूट ऑफ वर्ल्ड इकॉनमी एंड इंटरनेशनल रिलेशंस और रूसी विदेश मंत्रालय की तरफ से किया किया जाता है। इस मंच पर अलग-अलग विषयों के एक्सपर्ट अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और साइबर सिक्योरिटी जैसी वैश्विक चुनौतियों पर खुलकर चर्चा करते हैं। रूस के सरकारी टेलीविजन नेटवर्क आरटी (ऋञ्ज) ने शशि थरूर की किताबों पर 10 एपिसोड की एक डॉक्यूमेंट्री सीरीज ÷इम्पीरियल रिसीप्ट्स विद डॉ. शशि थरूर÷ बनाई है। इसी सीरीज के प्रमोशन के लिए कांग्रेस सांसद रूस में आयोजित होने वाले टीवी प्रोग्राम और इवेंट में हिस्सा लेने पहुंचे।

राजस्व खुफिया निदेशालय ने शुरू किया ऑपरेशन डीप मैनिफेस्ट

39 शिपिंग कंटेनरों को किया गया जब्त

रीवा (एजेंसी)। राजस्व खुफिया निदेशालय यानी डीआरआई ने एक एक्सऑपरेशन डीप मैनिफेस्टएक्स नाम का एक अभियान शुरू किया है। इस अभियान का उद्देश्य तीसरे देशों, मुख्यत~ दुबई, यूएई के माध्यम से पाकिस्तानी मूल के सामानों के अवैध यातायात को रोकना है। अब तक इस अभियान में 39 कंटेनरों को जब्त किया गया है, जिसमें करीब 1115 मीट्रिक टन सामान था, जिसकी कीमत लगभग 9 करोड़ रुपये थी। यह सामान आयात नीति की शर्तों और सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का उल्लंघन करते हुए भारत आयात किए गए थे। इस मामले में पुलिस ने इंपोर्टिंग फर्म के एक सहयोगी को 26 जून 2025 को गिरफ्तार किया है।

पहलगाम में हुए आतंकवादी हमलों के बाद सरकार ने 2 मई 2025 को पाकिस्तान के सामानों के निर्यात पर व्यापक प्रतिबंध लगा दिया था। पहले ऐसे डायरेक्ट या

इनडायरेक्ट रूप से इंपोर्ट किए गए सामानों पर सरकार द्वारा 200 फीसदी सीमा शुल्क लगाया जाता था। इन कड़े उपायों के बावजूद कुछ आयातक सरकार की नीति को दरकिनार करने का प्रयास कर रहे हैं और सामानों की उत्पत्ति को गलत तरीके से दिखाकर और संबंधित शिपिंग डॉक्यूमेंट्स में हेरफेर करके इन सामानों को भारत ला रहे हैं। दो अलग-अलग मामलों में इन खेपों को न्हावा शेवा बंदरगाह पर जब्त कर लिया गया था। आयातकों इन सामानों को गलत तरीके से यूएई मूल का दिखाकर भारत लाया जा रहा था, ताकि उन सामानों के पाकिस्तान मूल की पहचान को छिपाया जा सके। हालांकि जांच में यह पैदा चला कि उन सामानों को वास्तव में पाकिस्तान में बनाया या तैयार किया गया था।

जांच में यह जानकारी सामने आई है जो सामान पाकिस्तान में बनाए या तैयार किए गए हैं, उन्हें पहले पाकिस्तान से दुबई ले जाया जाता है। इसके उन सामानों को दूसरे कंटेनरों और दूसरे जहाजों में डालकर भारत भेजा जाता है। वर्तमान में जिन 39 कंटेनरों को जब्त किया गया है, उनकी जांच से पता चला कि माल को पहले कराची बंदरागल से जेबेल अली बंदरगाह भेजा गया और फिर उसके बाद भारतीय बंदरगाहों तक उन सामानों को लाया गया। बता दें कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद ही भारत ने पाकिस्तान से व्यापार को बंद कर रखा है।

बाप-बेटा मिलकर होटल की आड़ में चला रहे थे गंदा धंधा

नागपुर (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नागपुर में एक होटल की आड़ में सेक्स रैकेट चलाने वाले एक अपराधी और उसके बेटे पर क्राइम ब्रांच ने कार्रवाई की है। गोपनीय जानकारी के आधार पर पुलिस ने होटल में छापा मारा। 2 पीड़िताओं को छुड़ाकर पुलिस ने आरोपी पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी दत्तधामनगर, बेसा निवासी सचिन गंगाधर टुले (47) प्रज्वल सचिन टुले (22) हैं। पिता-पुत्र दोनों मिलकर ये बिजनेस कर रहे थे। दोनों ग्राहको को हॉटल उपलब्ध कराते थे। फिर एक खास कोडवर्ड दिया जाता था जिसके बाद उन्हे रूम और महिला के पास भेजा जाता था। 3 साल पहले सचिन और प्रज्वल ने बेसा रोड पर यह होटल शुरू किया था। आरोपी

गरीब युवतियों और महिलाओं को अपने होटल में बुलाते थे। इसके बाद ग्राहकों के साथ सौदा करके होटल में रूम उपलब्ध करवाए जाते थे। पिता-पुत्र ग्राहकों से 5,000 रुपये लेते थे और फिर वहां काम कर रही महिलाओं उनमें से 1,500 रुपये देते थे। क्राइम ब्रांच की सामाजिक सुरक्षा शाखा को गश्त के दौरान जानकारी मिली कि होटल में देह व्यवसाय चल रहा है। इसके बाद पुलिस ने पंटर ग्राहक तैयार कर आरोपियों के पास भेजा। सौदा तय होते ही पंटर ने पुलिस को इशारा दे दिया और होटल पर छापा मारा गया। जांच करने पर देह व्यवसाय में 2 पीड़िताएं लिप्त मिलीं। एक अविवाहित और दूसरी तलाकशुदा 50 वर्षीय महिला है।

आजाद परिंदे को भी आसमान पर..., शशि थरूर की पोस्ट के बाद आया कांग्रेस का जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी के अंदर तनाव का माहौल गहराता जा रहा है। पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद शशि थरूर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया, जिसे पार्टी नेतृत्व के साथ उनके तल्ख रिश्तों की अटकलों से जोड़ा जा रहा है। जवाब में, कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने तंज कसते हुए कहा, आजाद परिंदे को भी आसमान में सावधानी बरतनी चाहिए।बता दें कि विवाद की शुरुआत तब हुई, जब कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक बयान में तंज कसते हुए कहा था, कांग्रेस के लिए देश पहले है, लेकिन कुछ लोगों के लिए मोदी पहले हैं।

खरगे के तंज कसने के कुछ ही मिनटों बाद, थरूर ने एक्स पर एक उड़ते परिंदे की तस्वीर शेयर की और लिखा, उड़ने की इजाजत मत मांगो। पंख तुम्हारे हैं, और आसमान किसी का नहीं।इस पोस्ट को खड़गे के बयान का जवाब माना गया, जिससे थरूर की पार्टी के भीतर नाराजगी की खबरें और तेज हो गई। थरूर की मुश्किलें तब और बढ़ गई, जब उन्होंने हाल ही में एक अखबार में लिखे लेख में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की। उन्होंने मोदी को भारत के लिए महत्वपूर्ण संपत्तिबताया और उनकी ऊर्जा, गतिशीलता और जुड़ाव की इच्छाकी सराहना की।

गुरुवार को मणिकम टैगोर ने ङ्ग पर बिना नाम लिए थरूर पर निशाना साधते हुए लिखा, परिंदों को उड़ने के लिए इजाजत की जरूरत नहीं। लेकिन आज के दौर में आजाद परिंदे को भी आसमान पर नजर रखनी चाहिए। बाज, गिद्ध और चील हमेशा शिकार की ताक में रहते हैं। आजादी मुफ्त नहीं,

खासकर जब शिकारी देशभक्ति के पर पहनकर आते हैं।टैगोर का यह बयान थरूर को सावधान करने का एक प्रतीकात्मक संदेश माना जा रहा है। बता दें कि थरूर के नए रुख ने उनके बीजेपी में जाने की अटकलें तेज हो गई, लेकिन उन्होंने इन अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि उनके बयान राष्ट्रीय हित और ऑपरेशन सिंदूर के संदर्भ में थे, न कि किसी राजनीतिक बदलाव का संकेत थे।

थरूर को ऑपरेशन सिंदूर के समर्थन में सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था, जो सीमा पार आतंकी ढांचे को निशाना बनाता है। लेकिन उनके बयानों ने, जिसमें उन्होंने यूपीए सरकार के समय की सर्जिकल स्ट्राइक को कमतर बताते हुए मोदी सरकार की कार्रवाई की तारीफ की, कांग्रेस नेताओं में नाराजगी पैदा कर दी। थरूर ने अपने बचाव में कहा कि उनके बयानों को आलोचकों और ट्रोल्सने गलत तरीके से पेश किया। उन्होंने कहा, मेरे पास बनावटी गुस्से का जवाब देने से बेहतर काम हैं।उन्होंने पार्टी नेतृत्व के साथ किसी औपचारिक मतभेद से इनकार किया, लेकिन यह स्वीकार किया कि दृष्टिकोण और राय में कुछ मतभेद हैं।

थरूर ने बार-बार अपनी कांग्रेस के प्रति वफादारी जताई है, लेकिन उनकी स्वतंत्र राय और बयान पार्टी के मुख्य संदेशों से कई बार अलग नजर आते हैं। यह विवाद कांग्रेस के अंदर एकता और नेतृत्व के सवालों को फिर से सामने लाता है। यह घटनाक्रम कांग्रेस के लिए एक नई चुनौती बन सकता है, क्योंकि थरूर जैसे प्रभावशाली नेता का पार्टी लाइन से अलग हटना चर्चा का विषय बना हुआ है।

मूंग एवं उड़द की खरीद को पीएसएस के अंतर्गत स्वीकृति मिलने से सशक्त होगी ग्रामीण अर्थव्यवस्था- मंत्री श्री चौहान

भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर प्रदेश के किसानों को बड़ी सौगात मिली है। किसान कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखते हुए केंद्र सरकार ने मध्यप्रदेश में मूंग एवं उड़द को मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) के अंतर्गत खरीदी के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई है। अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री श्री नागर सिंह चौहान ने इस किसान हितैषी निर्णय का स्वागत किया है। उन्होंने केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का आभार भी व्यक्त किया। मंत्री श्री चौहान ने कहा कि यह निर्णय किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इस फैसले से ग्रामीण अंचल की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और अन्नदाता के परिश्रम को सम्मान भी प्राप्त होगा।

ओलिंपिक में नहीं दिखते मध्यप्रदेश के खिलाड़ी

भोपाल (एजेंसी)। सिर्फ 32 मेडल के साथ 10वें स्थान पर रहा मप्र, अकादमियों का फोकस उन खेलों पर जो ओलिंपिक में नहीं खेलों की बात करें तो मप्र की असली ताकत यूथ और जूनियर खिलाड़ी ही हैं। क्योंकि यहां अकादमियों का पूरा फोकस इन्हीं पर है। यहां 12-18 साल के बच्चे रखे जाते हैं। लेकिन, मई में बिहार में हुए खेलो इंडिया यूथ गेम्स में मप्र की ये ताकत चारों खाने चित नजर आई। मप्र ने 18 खेलों में 176 खिलाड़ी उतारे थे, जो महज 32 मेडल जीतकर 10वें स्थान पर रहे। इसमें 10 गोल्ड थे। पिछले यूथ गेम्स के मुकाबले 4 स्थान का सुधार जरूर हुआ है। लेकिन, परेशान करने वाली बात यह है कि दस में से आठ गोल्ड मप्र ने मलखंभ और थांगटा जैसे खेलों में जीते हैं, जो ओलिंपिक में शामिल नहीं हैं। हमारे अधिकतर मेडल ही उन खेलों में हैं, जो ओलिंपिक और एशियन गेम्स में शामिल नहीं है। यही वजह है कि जब ओलिंपिक और एशियन गेम्स के लिए भारतीय टीम चुनी जाती है तो मप्र के खिलाड़ी इक्का-दुक्का ही दिखते हैं। वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल, हैंडबॉल जैसे कई बड़े खेलों में तो मप्र क्वालिफाई ही नहीं कर पाता।

पीडब्ल्यूडी के दो इंजीनियरों की रिव्यू डीपीसी होल्ड, सात नए अभ्यावेदन आए

भोपाल (एजेंसी)। लोक निर्माण विभाग में बुधवार को रीवा में पदस्थ इंचार्ज चीफ इंजीनियर एससी वर्मा और एमपीआरडीसी में चीफ इंजीनियर बीपी बोरासी की होने वाली रिव्यू डीपीसी होल्ड हो गई है। अब यह 4 जुलाई को होगी। जानकारी मिली है कि इनकी डीपीसी की सूचना सामने आने के बाद विभाग के पास नए 7 अभ्यावेदन आ गए। इन्होंने लिखा कि इनके मामलों की सुनवाई करके इनकी भी डीपीसी की जाए। इसके बाद विभाग ने रिव्यू डीपीसी होल्ड करके नई तारीख तय कर दी। वर्मा और बौरासी ने आवेदन दिया था कि उनकी पुरानी डीपीसी में सीआर का मूल्यांकन कम हुआ था। दोबारा से डीपीसी की जाए। सहायक यंत्री उपलब्ध होते हुए भी, उपयंत्रियों को दिया कार्यपालन यंत्री का प्रभार पीडब्ल्यूडी में एक तरफ पदोन्नति पर काम चल रहा है तो दूसरी तरफ प्रभार देने में गड़बड़ी की शिकायत आ रही हैं। अब ताजा मामला है उपयंत्री को कार्यपालन यंत्री का प्रभार देने का मामला है। जबकि विभाग में करीब 200 सहायक यंत्री अपने मूल पद पर काम कर रहे हैं। नियमानुसार कार्यपालन यंत्री का पद रिक्त होने पर सहायक यंत्री को प्रभार सौंपा जाना चाहिए। स्थनांतरण नीति में सबसे पहले रिक्त पदों को भरा जाना था, लेकिन ऐसे महत्वपूर्ण पदों को रिक्त रखते हुए उपयंत्रियों को प्रभार सौंपा जा रहा है।

मध्यप्रदेश में पर्यटन की असीम संभावनाओं से खुलेंगे उन्नति के नए द्वार : उप मुयमंत्री शु ल

भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन तथा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में अधोसंरचना विकास, पारंपरिक संस्कृति का संरक्षण एवं प्रोत्साहन और पर्यटन क्षेत्र में निजी सहभागिता को बढ़ावा देकर सुनियोजित एवं एकीकृत प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों से आज मध्यप्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में असीम क्षमता और निवेश का आकर्षक क्षेत्र बन गया है। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल लखनऊ के होटल ताज महल में पर्यटन रोड शो में पर्यटन व्यवसायियों, टूर ऑपरेटर्स, ट्रेवल एजेंट्स और होटल व्यवसाय से जुड़े हितधारकों को संबोधित कर रहे थे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में तीव्र गति से विकास 3 क्रांतियों से होता है। औद्योगिक क्रांति, हरित क्रांति और पर्यटन क्रांति। इन तीनों क्रांतियों से स्वरोजगार और रोज़गार के अवसर सृजित होते हैं। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश दोनों प्रदेश इन तीनों क्रांतियो के लिये सबसे उपयुक्त प्रदेश हैं। उत्तरप्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जयवीर सिंह ने कहा कि मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश का सांस्कृतिक रूप से जुड़ाव रहा है। हमारे रीतिङ्करिवाज, त्यौहार, खानङ्कपान, रिश्तेङ्कनाते एक जैसे हैं। माँ गंगा से

माँ नर्मदा तक की यह यात्रा न केवल पर्यटकों को सुखद अनुभूति प्रदान करेगी बल्कि दोनों प्रदेश के संबंधों को भी प्रगाढ़ करेगी। पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने कहा कि पर्यटन किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास की रीढ़ है। वर्तमान में पर्यटन उद्योग वैश्विक अर्थव्यवस्था में सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में पर्यटन अधोसंरचनाओं के निर्माण और पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए सतत प्रयास किए जा रहे है। मध्यप्रदेश, अपनी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक और धार्मिक संपदा के लिए प्रसिद्ध है। राज्य मंत्री श्री लोधी ने मध्यप्रदेश की पर्यटन नीति और निवेश के अवसरों पर चर्चा करते हुए सभी से मध्यप्रदेश आने और प्रदेश में पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देने की अपील की।

प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि पर्यटन की दृष्टि से मध्यप्रदेश भारत का एक समृद्ध और विविधतापूर्ण राज्य है। उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के पर्यटन में काफी समानता है। बाबा महाकाल और बाबा काशी विश्वनाथ दुनियाभर के श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। दोनों ही ज्योर्तिलिंग को जोड़ने के लिये काशी विश्वनाथ महाकाल एक्सप्रेस संचालित होती है। गंगा और नर्मदा पर्यटन कॉरिडोर प्रस्तावित परियोजना के तहत मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थलों को जोड़ा जाएगा। प्रयागराज, अयोध्या, वाराणसी, ओंकारेश्वर और महाकालेश्वर से गुजरने वाले इस गलियारे में दोनों राज्यों के बीच पर्यटन सहयोग को बढ़ावा के साथ पर्यटकों को एक समृद्ध और विविध अनुभव मिलेगा।

जलगंगा संवर्धन अभियान से पुनर्जीवित हुई भोपाल की 'बड़े बाग़ की बावड़ी'

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा प्रारंभ किए गए जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत, भोपाल की ऐतिहासिक धरोहर 'बड़े बाग़ की बावड़ी' को नवजीवन मिला है। यह सफलता केवल विकास और जल संरचना के पुनरुद्धार की नहीं, बल्कि प्रदेश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण की भी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के पर्यावरण संरक्षण दृष्टिकोण और जल संरक्षण को लेकर प्रतिबद्ध नेतृत्व ने इस अभियान को जन-आंदोलन का रूप दिया है। करीब 200 वर्ष पूर्व निर्मित यह बावड़ी भोपाल की सबसे बड़ी बावड़ी है, बड़े बाग का कुल क्षेत्रफल 32 एकड़ है और यहां कई जल संरचनाएं हैं, उनमें से इसह बावड़ी की गहराई 60 फीट है। बावड़ी दो मकबरों

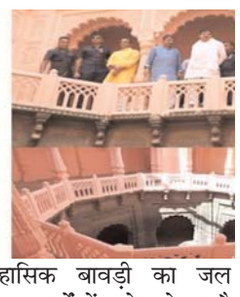

के मध्य स्थित है यह बावड़ी स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण भी है। जिला प्रशासन एवं नगर निगम भोपाल द्वारा इस बावड़ी की सफाई, सिल्ट हटाने, खरपतवार उन्मूलन, दीवारों और सीढ़ियों की मरम्मत, रंगाई-पुताई तथा सुरक्षा जाली लगाने जैसे कार्य तेज़ी से किए गए। लगभग 40 क्यूबिक मीटर सिल्ट हटाने और जल ग्रहण क्षमता को 2000 लीटर प्रति घंटा तक पहुँचाने के बाद यह संरचना फिर से उपयोग में लाई जा रही है।आज इस ऐतिहासिक बावड़ी का जल निस्तार कार्यों में प्रयोग हो रहा है और यह स्थल अब भोपाल की जल धरोहर एवं सांस्कृतिक पर्यटन का केंद्र बन रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की दूरदर्शिता ने इस बावड़ी को एक बार फिर जीवंत कर दिया है। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत यह कार्य न केवल एक संरचना का पुनरुद्धार है, बल्कि जल संरक्षण के प्रति मध्यप्रदेश सरकार की गहरी प्रतिबद्धता का भी प्रमाण है।

गुना में दुर्घटना स्थल पहुंचे प्रभारी मंत्री राजपूत

भोपाल (एजेंसी)। गुना जिले के राघौगढ़ क्षेत्र के गांव धरनावदा में घटित दुर्घटना के बाद जिले के प्रभारी एवं खाद्य, नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत मंगलवार रात में ही गुना पहुंचें। उन्होंने बुधवार सुबह प्रशासनिक अधिकारियों के साथ घटना स्थल का दौरा किया।

श्री राजपूत ने पीड़ित परिवारों से मिलकर उन्हें ढाढस बंधाया। मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि घटना के बाद प्रशासन ने त्वरित कार्यवाही प्रारंभ की और मुख्यमंत्री जी को घटना के संबंध में अवगत करवाया गया। घटना बहुत ही दुखद है। राज्य सरकार दु:ख की इस घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। उल्लेखनीय है

कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मृतकों के परिजनों को 4-4 लाख की आर्थिक सहायता स्वीकृत की। प्रभारी मंत्री ने कहा कि घटना की जांच के आदेश दिए गए है ताकि घटना के सही कारणों का पता चल सके।

भारी वर्षा और बाढ़ के पहले आंगनवाड़ी केन्द्रों सुरक्षा और स्वास्थ्य की पुख्ता तैयारी

भोपाल (एजेंसी)। आयुक्त महिला बाल विकास श्रीमती सूफ़िया फारूकी वली ने आगामी वर्षा ऋतु को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों में सुरक्षा, स्वास्थ्य और पोषण संबंधी आवश्यक तैयारियों के लिये दिशा-निर्देश जारी किये। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वर्षाकाल के दौरान आंगनवाड़ी केन्द्रों की पहुंच बाधित हो सकती है, वहीं जलजनित बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में समय रहते सतर्कता और समन्वय बेहद आवश्यक है। श्रीमती वली ने कहा कि आंगनवाड़ी केन्द्र के माध्यम से हम प्रदेश के सबसे संवेदनशील वर्ग, छोटे बच्चे और महिलाओं तक पहुंचते हैं। वर्षा ऋतु में हमारी सजगता और तैयारी ही उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा की सबसे बड़ी गारंटी होगी। श्रीमती वली ने पहुंचविहीन क्षेत्रों की आंगनवाड़ियों में टेकहोम राशन की निरंतर आपूर्ति के लिये संयंत्रों से समन्वय बनाने के निर्देश दिये हैं। स्व-सहायता समूहों को वर्षाकाल में भोजन की स्वच्छता बनाये रखने और मक्खी, मच्छर से बचाव और स्वस्थ पेयजल के उपयोग के निर्देश दिये हैं। हितग्राहियों को टेकहोम राशन की सुरक्षा, भण्डारण और स्वच्छता संबंधी सलाह भी दी जायेगी। आंगनवाड़ी केन्द्रों के बच्चों के त्वारित ईलाज के लिये स्वास्थ्य विभाग के मैदानी अमले से समन्वय कर हर परिवार को नजदीकी स्वास्थ्य कार्यकर्ता और एएनएम के सम्पर्क नंबर उपलब्ध कराये जायेंगे। इन नंबरों को ग्राम पंचायत भवन एवं आंगनवाड़ी केन्द्रों के बाहर लिखे जाने के निर्देश दिये गये हैं। सभी केन्द्रों पर ओआरएस, जिंक, आयरन टेबलेट एवं प्राथमिक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जायेगी। आशा और एएनएम कार्यकर्ताओं के सहयोग से सभी परिवारों में ओआरएस के पैकेट तथा जिंग गोलियों की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जायेगी। आयुक्त श्रीमती वली ने गृहभेंट में प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल, शौचालय का उपयोग करने, घर एवं घर के आसपास स्वच्छता रखने की सलाह और समझाईश देने के निर्देश दिये हैं। स्वास्थ्य एवं आशा कार्यकर्ता के सहयोग से क्षेत्र के सभी खुले जल स्त्रोतों में क्लोरिन के उपयोग से जल को पीने योग्य बनाने, हेण्डपम्प की जांच कराने और जल शुद्धि के लिये क्लोरिन टेबलेट वितरित करने की व्यवस्था की जायेगी। पानी एकत्रित होने से मच्छरों अथवा अन्य बीमारियां न हो इसके लिये पंचायत के सहयोग से पेयजल स्त्रोतों के आसपास स्वच्छता, ग्रामों में पेयजल स्त्रोतों, हेण्डपम्प, कुओं, सार्वजनिक नल के आसपास पानी की उचित निकासी की व्यवस्था की जायेगी।

श्रीमती वली ने निर्देश दिये हैं कि अतिवर्षा या बाढ़ की स्थिति में निचले क्षेत्रों रहने वाले परिवारों को पंचायत के सहयोग से सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित पहले से करने की योजना पहले से तैयार की जाये।

सभी विभाग पदोन्नति कार्य को दें सर्वोच्च प्राथमिकता

भोपाल (एजेंसी)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने सभी विभाग प्रमुखों से कहा कि लोक सेवा पदोन्नति नियम-2025 के तहत पदो?न्नति कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाये। यह प्रयास किया जाये कि 31 जुलाई 2025 तक अधिकारी-कर्मचारियों को पदोन्नत किया जा सके। उन्होंने कहा कि राज्य शासन की मंशानुरूप कर्मचारी-कल्याण को प्रमुखता से लें। मुख्य सचिव श्री जैन ने गुरूवार को मंत्रालय में लोकसेवा पदोन्नति नियम-2025 के परिचर्चा के दौरान यह निर्देश विभाग प्रमुखों को दिये। मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि 9 साल की बड़ी समस्या इस नियम के लागू होने से समाप्त हो सकेगी। नियमों को बनाने में वरिष्ठ सचिव समिति एवं सामान्य

प्रशासन विभाग के अधिकारियों ने बहुत मेहनत एवं गहन चर्चा की। नियमों के लागू होने से प्रशासनिक दक्षता बढ़ेगी।

मुख्य सचिव श्री जैन ने अधिकारियों से कहा कि अपने विभाग में कर्मचारी-कल्याण को प्राथमिकता दी जाये। विभागीय परामर्शदात्री समिति की बैठकें आयोजित की जाये। कर्मचारियों के गोपनीय प्रतिवेदन, विभागीय जाँच एवं पेंशन प्रकरणों का निराकरण समय से करें।

परिचर्चा के दौरान अपर मुख्य सचिव सामान्य प्रशासन श्री संजय दुबे एवं उप सचिव श्री अजय कटेसरिया ने मध्यप्रदेश लोकसेवा पदोन्नति नियम-2025 की विस्तृत जानकारी दी। इसमें अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति प्रवर्ग के लिए आरक्षित पदों की गणना, विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक, अर्हकारी सेवा की गणना, वार्षिक गोपनीय प्रतिवेदन, पदोन्नति हेतु अनुपयुक्तता, पदोन्नति का प्रकार, पदोन्नति के फलस्वरूप वेतन का निर्धारण, सीलबंद लिफाफे की स्थिति में प्रक्रिया सहित प्रतीक्षा सूची से रिक्तियों को भरे जाने की विस्तृत जानकारी दी गयी।

परिचर्चा में पुलिस, महिला एवं बाल विकास, नगरीय प्रशासन, अनुसूचित जाति विकास, परिवहन, वन सहित अन्य विभाग के अधिकारियों के प्रश्नों का समाधान मुख्य सचिव श्री जैन द्वारा किया गया।

नगरीय निकायों में हरित क्षेत्र विस्तार पर जनप्रतिनिधि विशेष ध्यान दें

भोपाल (एजेंसी)। नगरीय प्रशासन एवं विकास आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने मंगलवार को भोपाल के पालिका भवन में प्रदेश के विभिन्न नगरीय निकायों के अध्यक्षों के साथ बैठक की। उन्होंने जनप्रतिनिधियों से शहरी क्षेत्र में विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। बैठक में सफाई कामगार आयोग के अध्यक्ष श्री प्रताप करोसिया भी मौजूद थे।

आयुक्त नगरीय प्रशासन ने कहा कि नगरीय क्षेत्रों में पर्यावरण के संतुलन के लिये हरित क्षेत्र के विस्तार की आवश्यकता है। इसके साथ ही नगरीय क्षेत्रों में पार्कों के रख-रखाव की तरफ भी नियमित रूप से देखभाल किये जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अमृत योजना के अंतर्गत 12

हजार करोड़ रूपये की लागत से विभिन्न विकास कार्य प्रगति पर हैं। आयुक्त ने कहा कि नगरीय निकायों में नियमित कर संग्रहण पर ध्यान दिया जाये। कर संग्रहण में सूचना प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग किया जाए। आयुक्त श्री भोंडवे ने कहा कि नगरीय निकाय में उचित प्रबंधन के लिये अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिये फेस रिकग्निशन अटेंडेंस सिस्टम (एफआरएएस) लागू की जाये और इसमें पूरी पारदर्शिता रखी जाये। उन्होंने हाल ही में राज्य सरकार के पदोन्नति संबंधी आदेश की जानकारी भी साझा की। आयुक्त ने कहा कि इस आदेश से निकायों में सफाई मित्र, माली जैसे आवश्यक पदों पर पदोन्नति और नई नियुक्तियां की जा सकेंगी। उन्होंने नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों से कहा कि वे अपने क्षेत्र में ई-व्हीकल्स के उपयोग को प्रोत्साहित करें। आयुक्त श्री भोंडवे ने विभाग की कर संग्रहण प्रोत्साहन पुरस्कार योजना की जानकरी जनप्रतिनिधियों से साझा की। उन्होंने बताया कि कर संग्रहण के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले निकायों को 100 करोड़ रूपये की प्रोत्साहन राशि वितरित की जायेगी।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने गोविंदपुरा क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने बुधवार को गोविंदपुरा क्षेत्र की बस्तियों में 74 लाख रुपए लागत से नाली निर्माण का भूमि-पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने नालियों की सफाई, ट्रंक लाइन डालने और कबाड़ हटाने के निर्देश भी दिए। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने वर्षा ऋतु की संभावित चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए गोविंदपुरा क्षेत्र के वार्ड 73 चांदवाड़ी में नाली सफाई कार्य का निरीक्षण कर अधिकारियों को समयबद्ध सफाई के निर्देश दिए। जनसंपर्क के दौरान रहवासियों की समस्याओं को जाना और समाधान सुनिश्चित करने का भरोसा दिलाया। चांदबाड़ी में 16 लाख की लागत से तैयार हो रहे नवनिर्मित आंगनवाड़ी स्कूल का निरीक्षण किया और इसे जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। शिवनगर फेस-1 में 10 लाख रुपए की लागत से बनने वाली सड़क और नाली निर्माण

कार्य का भूमि-पूजन किया। जोन-16 छोटे जिंद बाबा के पास शिवनगर में सीसी रोड एवं आरसीसी नाली निर्माण लागत 26 लाख कार्य का भूमि-पूजन किया। शिवनगर फेस 1, 2, 3 में आरसीसी नाली निर्माण लागत 19 लाख कार्य का भूमि-पूजन किया।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने वार्ड में स्ट्रीट लाइट, पेयजल से जुड़ी नागरिक सुविधाओं का निरीक्षण कर अधिकारियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

रिसर्च के निष्कर्ष पूरे देश में टाइप-1 डायबिटीज के रोकथाम में मददगार होंगे

भोपाल(एजेंसी)। क्लिंटन फाउंडेशन ने टाइप-1 डायबिटीज पर विशेष शोध के लिए भोपाल को चुना है। यह रिसर्च विशेष रूप से बच्चों और किशोरों में डायबिटीज की बढ़ती प्रवृत्ति को समझने और उसके प्रभावी इलाज की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। टाइप-1 डायबिटीज एक ऑटोइम्यून बीमारी है, जिसमें शरीर का इम्यून सिस्टम गलती से अपने ही पैंक्रियास की इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देता है। यह बीमारी आमतौर पर बचपन या किशोरावस्था में सामने आती है और मरीज को जीवनभर इंसुलिन पर निर्भर रहना पड़ता है। क्लिंटन फाउंडेशन ने भोपाल को इसलिए चुना है क्योंकि यह शहर शहरी और ग्रामीण, दोनों प्रकार की जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। इससे बीमारी के सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक पहलुओं का तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो सकेगा। साथ ही, भोपाल में पहले से संचालित स्वास्थ्य योजनाओं और संस्थागत आधार की उपलब्धता इस शोध को मजबूती प्रदान करती है।

जिला स्तरीय इंस्पायर अवार्ड मानक विज्ञान प्रदर्शनी 2025 सम्पन्न

ज्ञान पाने के लिए त्याग और संघर्श जरूरी-राज्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं म.प्र. स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित इंस्पायर अवार्ड मानक विज्ञान प्रदर्शनी 2025 का समापन गुरूवार को शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय व्यंकट ₹ मांक-1 में नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी के मुख्यातिथ्य में समारोहपूर्वक किया गया। कार्यर्₹ म में महापौर योगेश ताम्रकार, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह परिहार, कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस, प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी विष्णु त्रिपाठी, एडीई गिरीश अग्निहोत्री, एडीपीसी सुनील कुमार निगम, प्राचार्य कमलेश सिंह बघेल, प्रोफेसर डॉ. शिवेश प्रताप सिंह सहित शैक्षणिक स्टाफ छात्र-छात्रायें तथा अभिभावक उपस्थित रहे।

राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि छात्र-छात्रायें अपने गुण, ज्ञान और संस्कार से आगे बढते है। विद्यालय का काम सिर्फ उन्हें आगे बढाने में सहयोग करना है। उन्होंने कहा कि ज्ञान पाने के लिए भौतिक सुख-सुविधाओं और आलस्य का त्याग करना पडता है। जीवन में अभाव और संघर्ष से जूझ कर आगे बढने वाले ही सफ्लता को प्राप्त करते है। राज्यमंत्री ने कहा कि अभाव का जीवन जीकर सरकारी स्कूल में पढने वाले बच्चे ही अक्सर आईएएस और आईपीएस जैसे बडे-बडे पदों पर पदासीन होते हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रतियोगिता में शामिल होना यह दर्शाता है कि उस स्पर्धा को जीतने की क्षमता और आत्मविश्वास प्रतिभागी में है। किसी भी प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागी की कभी हार नहीं होती। वह या तो जीतता है या सीखता है। कार्यर्₹ म को महापौर, जिला पंचायत अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष ने भी संबोधित किया।

25 एवं 26 जून को आयोजित दो दिवसीय जिला स्तरीय मानक इस्पायर अवार्ड विज्ञान प्रदर्शनी में सतना एवं मैहर जिले के विभिन्न विद्यालयों से 173 विद्यार्थी अपने प्रोजेक्ट माडल को लेकर शामिल हुए। जिनमें 18 छात्र-छात्राओं का राज्य स्तर की प्रतियोगिता के लिए किया गया है। छात्रों ने अपने रि याशील माडलों में नवाचार एवं तकनीकी कौशल का भरपूर उपयोग किया तथा कई नवीन मॉडल प्रस्तुत किये। ज्यूरी के रूप में राष्ट्रीय नवप्रर्वतन प्रतिष्ठान से वैज्ञानिक भारत सरकार से नियुक्त इंजीनियर विराट त्रिपाठी, सेवा निवृत्त प्राध्यापक डॉ. जेपी गुप्ता तथा डॉ. शिवेश प्रताप सिंह ने विद्यार्थियों द्वारा बनाये गऐ प्रार्दशों का अवलोकन कर मूल्याकंन किया।

सिन्धु विकास समिति ने की महापौर से सौजन्य भेंट

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। बुधवार को समाजसेवी संस्था सिन्धु विकास समिति ने संस्थाध्यक्ष विनोद गेलानी के नेतृत्व में महापौर श्री योगेश ताम्रकार जी से सौजन्य भेंट की। संस्था के महामंत्री घनश्याम मंघरानी ने बताया कि महापौर जी के साथ विभिन्न विषयों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष विनोद गेलानी, महामंत्री घनश्याम मंघरानी, मंत्री संजय वाधवानी, गंगाराम सचदेव, सहमंत्री दिलीप सोनी, कार्यकारिणी सदस्य पंकज आहूजा और मनीष सदानी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

होंडा मोटरसाइकिल ने सतना में बच्चों को सड़क सुरक्षा के लिए किया जागरूक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने सतना, मध्य प्रदेश में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इस पहल में आदित्य कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस और राम कृष्ण कॉलेज ऑफ पॉलिटेक्निक एंड मैनेजमेंट के 2400 से अधिक छात्रों और स्टाफ ने हिस्सा लिया। इंटरएक्टिव सत्रों के माध्यम से छात्रों को हेलमेट पहनने और सड़क अनुशासन जैसे सुरक्षित राइडिंग के तौर-तरीके सिखाए गए। यह अभियान मध्य प्रदेश में होंडा की सड़क सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कंपनी पूरे भारत में स्कूलों, कॉलेजों और ट्रैफिक विभागों के साथ मिलकर लाखों लोगों तक जागरूकता पहुँचा रही है।

आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर टीआरएस कॉलेज में प्रबोधन कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा में आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर म.प्र. शासन संस्कृति विभाग और उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार प्रबोधन कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्राचार्य डॉ. अर्पिता अवस्थी के निर्देशन में हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मीसा बंदी सुभाष श्रीवास्तव और विशिष्ट अतिथि शिवदत्त पाण्डेय, साकेत श्रीवास्तव, राजराखन पटेल, अभिषेक साहू उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. महानन्द द्विवेदी ने की। डॉ. एसपी. शुक्ल ने आपातकाल को नागरिक अधिकारों का उल्लंघन और संविधान के संरक्षी उपायों का क्षरण बताया। सुभाष श्रीवास्तव ने आपातकाल के अनुभव साझा किए, जबकि साकेत श्रीवास्तव ने मीसा बंदियों के गीत प्रस्तुत किए। संचालन डॉ. एसपी. शुक्ल और आभार प्रदर्शन डॉ. अलोक मिश्र ने किया। कार्यक्रम में प्राध्यापक, कर्मचारी और छात्र-छात्राएं शामिल हुए।

राज्यमंत्री बागरी ने सुनी आमजनों की समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने गुरूवार को विधानसभा क्षेत्र कार्यालय सतना में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी द्वारा समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है। उसके लिये प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए।

कलेक्टर ने इनक्यूबेशन सेंटर का किया अवलोकन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने गुरूवार को सतना स्मार्ट सिटी के इनक्यूबेशन सेंटर का अवलोकन किया। कलेक्टर ने इनक्यूबेशन सेंटर में चल रही व्यवस्थाओं के संबंध में संबंधित अधिकारियों से जानकारी ली। इस अवसर पर आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना और इनक्यूबेशन सेंटर के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

कृषक पुरूस्कार के लिए आवेदन 15 अगस्त तक आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। म.प्र. शासन कल्याण तथा कृषि विभाग द्वारा वर्ष 2024-25 हेतु कृषि विस्तार सुधार कार्यर्₹ म (आत्मा परियोजना) के अंतर्गत सर्वोत्तम कृषक राज्य, जिला एवं विकासखण्ड स्तर के लिए कृषक पुरस्कार एवं कृषक समूह पुरस्कार के लिए 15 अगस्त 2025 तक आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। किसान कल्याण तथा कृषि विकास परियोजना संचालक आत्मा मनोज कश्यप ने बताया कि विकासखंड स्तरीय सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार राज्य, जिला एवं विकास स्तर के पुरूस्कार के लिए 10 हजार, 25 हजार तथा 50 हजार रूपये की राशि एवं जिला स्तरीय सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार 20 हजार रूपये की राशि निर्धारित की गई है। जिले के इच्छुक कृषकगण, कृषक समूह गण, कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य, रेशम पालन, कृषि अभियांत्रिकी विधाओं में अपनाई गई तकनीकी, नवाचार तकनीक का विस्तार फसल उपज एवं उत्पादकता के आधार पर आवेदन कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये विकासखंड के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, कृषि विस्तार अधिकारी, विकासखण्ड तकनीकी प्रबंधक, सहायक तकनीकी प्रबंधक तथा सहायक तकनीकी प्रबंधक से संपर्क कर परियोजना संचालक आत्मा समिति में आवेदन कर सकते हैं।

'नशा एक ऐसी सामाजिक बुराई है जिससे व्यक्ति की तीन पीढ़ी बर्बाद हो जाती है'

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश शासन सामाजिक न्याय विभाग के निर्देशानुसार रेलवे स्टेशन परिसर मे गुरुवार को अंतर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस के अवसर में डिग्री कॉलेज सतना से एनएसएस के छात्र-छात्राओं द्वारा नशा मुक्ति पर नुक्कड़ नाटक की रोचक व संदेहस्प्रद प्रस्तुति के माध्यम से नशीले मादक पदार्थों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया गया। कार्यर्₹ म में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं न्यायाधीश सचिव पार्थ शंकर मिश्रा की उपस्थिति में अभियान के तहत 1 जून से 26 जून तक संचालित विविध कार्यर्₹ मों के ₹ म में समाज में बढ़ती हुई नशा सेवन की प्रवृत्ति में रोकथाम का अभियान चलाकर पोस्टर, पंपलेट वितरण, नुक्कड़ नाटक, उद्बोधन, गीत तथा नारा उद्घोष के माध्यमों से सामाजिक जनजागृति का आयोजन सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर जिला विधिक अधिकारी मोहम्मद जीलानी, स्टेशन प्रबंधक ए मतीन अवध गोपाल मिश्रा, उप स्टेशन प्रबंधक ललन कुमार, आलोक रंजन, उप निरीक्षक जयकरण मिश्रा, स्वास्थ्य निरीक्षक जीके गुप्ता, सुपरवाइजर वीरेंद्र कुमार एवं डिग्री कॉलेज कॉलेज की प्राध्यापिका र ंति मिश्रा सहित छात्र-छात्रायें सहित बडी संख्या में आम नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम प्रभारी केके शुक्ला ने बताया कि आज शहर से लेकर गांव तक मादक पदार्थ नशीले सिरप के ₹ य विर्₹ य का जाल फैल चुका है। जिस कारण तमाम सामाजिक पतन हो रहा है। अब लोगों के बीच में नशा मुक्ति का संदेश फैलाने का काम हम सबको मजबूती से करना होगा। जिस तरह से हमारी युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में आ रही है। उससे देश के भविष्य पर बुरा असर पड़ेगा। युवाओं को नशे की लत से दूर करने के मामले में हर किसी को अपना सहयोग देना होगा। क्योंकि यह समाज और देश का मामला है। उन्होंने कहा कि स्कूल और कॉलेज के लड़के सर्वाधिक नशे की चपेट में आते जा रहे हैं।

शहर के विभिन्न स्थानों में जिस तरह से नशा करने वाले युवाओं की भीड़ लगती है। उससे यह समझा जा सकता है कि समय रहते युवाओं को इस नशे के मार्ग से दूर करना देश के हित में बहुत जरूरी हो गया है। यह काम अकेले कोई सरकार तथा कोई विभाग नहीं कर सकता। बल्कि समाज में रहने वाले हर वर्ग के लोग नशा मुक्ति अभियान में सहभागी बनकर परस्पर सहयोग से कार्य करें तभी यह संभव हो सकेगा। नशे के कारण सैकड़ो परिवारों की बनाई गई गृहस्ती तबाह हो रही है। इसलिए नशा से जितना दूर रहेंगे। भविष्य उतना ही बेहतर होगा। नशा मुक्त समाज निर्माण के लिए सामाजिक जन जागरूकता लाने पर जोर देना होगा। नशा एक ऐसी सामाजिक बुराई है। जिससे व्यक्ति की तीन पीढ़ी बर्बाद हो जाती है। कार्यर्₹ म के अंत में उपस्थित जन समूह व रेल के इंतजार में बैठे यात्रियों ने नशा नहीं करने का संकल्प लिया।

भगवान जगन्नाथ स्वामी को कराया गया औषधि महास्नान, कल करेंगे नगर भ्रमण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में पिछले 15 दिनों से बीमार चल रहे भगवान जगन्नाथ स्वामी अब पूर्णतः स्वस्थ हो गए हैं। बुधवार को नगर वैद्य ओमप्रकाश पंसारी द्वारा औषधीय उपचार पूर्ण किए जाने के बाद भगवान को स्वास्थ्य लाभ हुआ। बीमार होने के दौरान भगवान को ठंडई की औषधि दी जा रही थी, जिसकी अवधि अब पूरी हो चुकी है। दीनानाथ शास्त्री ने बताया कि भगवान के पूर्ण स्वस्थ होने के उपलक्ष्य पर गुरुवार 26 जून को औषधि महास्नान का आयोजन किया गया। इसके बाद भगवान को नवीन वस्त्र धारण कराए गए। अब 27 जून को विशेष श्रृंगार होगा और उसी दिन शाम 4 बजे लक्ष्मणबाग संस्थान से भगवान जगन्नाथ की भव्य रथयात्रा निकाली जाएगी।

समस्त खाद, बीज एवं कीटनाशक विक्रय के लिए फाइल लोक सेवा केन्द्र में अपलोड करवायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। किसान कल्याण तथा कृषि विकास मनोज कश्यप ने जिले के समस्त खाद, बीज एवं कीटनाशक विर्₹ य संस्थानों (सहकारी एवं निजी) को कहा कि अनुज्ञप्ति बनवाने के लिए फाइल लोक सेवा केन्द्र में जाकर अपलोड करवायें तथा अनुज्ञप्ति में ओ-फार्म अतिरिक्त पीसी जुडवाने हेतु फाइलें संबंधित वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी के कार्यालय में जमा करवाये। साथ ही निरीक्षक वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी द्वारा परीक्षण उपरांत कार्यालय वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी के माध्यम से अनुज्ञप्ति में ओ-फार्म अतिरिक्त पीसी जुडवाने के लिए फाइलें अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में प्रेषित की जायेगी।

सीधी के पड़खुरी में श्री वेद माता गायत्री ट्रस्ट आश्रम में पांच दिवसीय साधना सत्र का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी के श्री वेद माता गायत्री ट्रस्ट आश्रम, पड़खुरी में 21 से 25 जून 2025 तक पांच दिवसीय विशिष्ट साधना सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का उद्देश्य विचार क्रांति अभियान को विश्वव्यापी बनाना, युग नेतृत्व के लिए साधकों को प्रेरित करना, आत्म कल्याण और लोक हित की प्राप्ति था।

लोक हितार्थ और आत्म कल्याण के उद्देश्य को ध्यान में रखकर यह साधना निशुल्क आयोजित की गई। सत्र में चितरंगी, मऊगंज, भोपाल, सीधी, नागोद और रीवा के 20 गायत्री परिजनों ने हिस्सा लिया। प्रतिदिन सुबह 4 बजे से रात साढ़े 8 बजे तक विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं, जिसमें सुबह 5 से साढ़े 7 तक सामूहिक गायत्री महामंत्र जाप शामिल था। पांच दिनों में कुल 1,50,000 गायत्री महामंत्र जाप किए गए। शांतिकुंज हरिद्वार के प्रतिनिधि प्रभाकांत तिवारी, उप जोन समन्वयक और पड़खुरी आश्रम व्यवस्थापक, ने साधकों को गायत्री जाप, यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व, संगठन का स्वरूप, जन्म शताब्दी वर्ष के दायित्व, युग निर्माण के संकल्प और यज्ञीय कर्मकांड का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने साधकों की शंकाओं का समाधान भी किया। बिदाई सत्र में सभी साधकों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। सत्र में सुधीर पांडे और निवेदिता पांडे का आठवां विवाह उत्सव दीप यज्ञ के साथ मनाया गया। पांच कार्यकर्ताओं ने पड़खुरी आश्रम के लिए एक माह का समयदान देने का संकल्प लिया। बताया गया है कि यह साधना सत्र प्रत्येक माह 21 से 25 तारीख तक आयोजित होगा। पंजीकरण शांतिकुंज की वेबसाइट के माध्यम ऑनलाइन के माध्यम से किया जा सकता है।

सीधी में नाट्य कार्यशाला के द्वितीय चरण का हुआ समापन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले की इंद्रावती नाट्य संस्था द्वारा आयोजित बाल नाट्य कार्यशाला के द्वितीय चरण का शानदार समापन 26 जून को हुआ। इस अवसर पर कार्यशाला से प्रशिक्षण प्राप्त प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जिसमें सृजन मिश्र ने सुगम गायन प्रस्तुत किया, जिसमें तबले पर श्लोक तिवारी ने संगत की। इस अवसर पर नाटक भगवद्ज्जुकम का मंचन भी किया गया। जिसमें मूल आलेख बोधायन का, संगीत संयोजन सृजन मिश्र का, बघेली रूपांतरण, संगीत परिकल्पना एवं निर्देशन रोशनी प्रसाद मिश्र का रहा। कार्यशाला संयोजक सूर्यप्रकाश सिंह बघेल व परिकल्पना नीरज कुंदेर की रही।

सतना में 111.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिले में इस वर्ष 1 जून से 26 जून तक 111.8 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 228.4 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 68.5 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 92.6 मि.मी, बिरसिंहपुर में 74.7 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 43 मि.मी., नागौद में 211.9 मि.मी., जसो (नागौद) में 39.5 मि.मी. एवं उचेहरा में 135.5 मि.मी. औसत वर्षा अब तक दर्ज की जा चुकी है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है। विगत वर्ष इस अवधि तक जिले में औसत वर्षा 41 मि.मी. वर्षा दर्ज की जा चुकी थी।

विचार

आम जन के बीच भूमिका तलाशे राजभाषा विभाग

इसे संयोग कहें या कुछ और, राजभाषा हिंदी को प्रतिष्ठापित करने के लिए गठित भारत सरकार का राजभाषा विभाग जिस समय अपनी पचासवीं सालगिरह मना रहा है, ठीक उसी वक्त महाराष्ट्र और कर्नाटक समेत कई राज्यों में राजभाषा को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। सवाल तो उस महाराष्ट्र में भी उठ रहा है, जहां के लोकमान्य तिलक, काका कालेलकर और विनोबा भावे जैसी विभूतियों ने हिंदी में राष्ट्रीय एकता के सूत्र दिखे थे। सदा की तरह तमिलनाडु ने हिंदी विरोध में राजनीतिक मोर्चा खोल ही रखा है। संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के तौर पर भले ही स्वीकार कर लिया था, लेकिन राजभाषा के प्रतिष्ठापन और कार्यान्वयन को लेकर अलग से विभाग की स्थापना आजादी के फौरन बाद नहीं हो पाई। राजभाषा विभाग की स्थापना आजादी के 28 वर्ष बाद 26 जून 1975 को हुई थी। इसे संयोग ही कहेंगे कि जिस दिन स्वाधीन भारत के इतिहास के काले अध्याय यानी आपातकाल की घोषणा हुई, ठीक उसके अगले दिन राजभाषा विभाग अस्तित्व में आया। वैसे यह भी ध्यान देने की बात है कि संभवतः भारत अकेला देश है, जहां राजभाषा के लिए अलग से विभाग है। राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए अधिकारी हैं। दुनिया में ऐसा उदाहरण किसी दूसरे देश में नहीं मिलता। पचास साल की यात्रा पूरी कर चुके राजभाषा विभाग की स्थापना का बुनियादी उद्देश्य राजभाषा संबंधी संवैधानिक और कानूनी नियमों का पालन सुनिश्चित कराना और संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना रहा। किसी विभाग की पचास साल की यात्रा कोई कम नहीं होती। यह ठीक है कि इस दौरान हिंदी ने लंबा सफर तय किया है। संचार के माध्यमों, बाजार और सिनेमा ने हिंदी को दुनिया के उस कोने तक पहुंचा दिया है, जहां सरकारी सहयोग से उसके पहुंचने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसके बावजूद हाल के दिनों में देखा जा रहा है कि नए सिरे से हिंदी के विरोध में आवाजें उठ रही हैं। हिंदी विरोधी सुर उन राज्यों में भी दिख रहे हैं, जहां कभी हिंदी के समर्थन में आंदोलन हुए, हिंदी ने जहां रचनात्मक उपलब्धियां हासिल कीं। महाराष्ट्र ऐसा ही राज्य है। लेकिन नई शिक्षा नीति के त्रिभाषा फॉर्मूले के तहत हिंदी को रखने के चलते इस राज्य में विरोध तेज हो गया। इस विरोध की आंच बैंकों और केंद्र सरकार के दूसरे दफ्तरों तक पहुंची, जहां हिंदीभाषी कर्मचारी और अधिकारी कार्यरत हैं। स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने उन पर मराठी बोलने का दबाव बढ़ाया। सोशल मीडिया के जरिए दुनिया ने देखा कि मराठी नहीं बोल पाने के कारण बैंकों और दूसरे संस्थानों के कर्मचारियों से किस तरह बदसलूकी हुई। महाराष्ट्र से सटे कर्नाटक राज्य में भी ऐसा नजर आया। कन्नड़ ना बोल पाने के कारण एक बैंक अधिकारी के साथ स्थानीय समूह बदतमीजी करते नजर आए। सॉफ्टवेयर क्रांति का केंद्र बेंगलुरू में हिंदी बोलने के कारण उत्तर भारतीयों को ऑटो और बाइक चालकों की बदसलूकी का शिकार होना पड़ा है। आजादी के सतहत्तर साल बीतने और राजभाषा विभाग के गठन के पचास साल होने के बावजूद किसी गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदीभाषियों के साथ बदसलूकी होने के पीछे कहीं न कहीं राजभाषा विभाग की नाकामी भी है।

भारत आध्यात्म एवं युवाओं के बल पर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में अतुलनीय वृद्धि कर सकता है

प्रह्लाद सबनानी

जापान की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और संभवत आगामी लगभग दो वर्षों के अंदर जर्मनी की अर्थव्यवस्था से आगे निकलकर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की अपनी अपनी विशेषताएं हैं, जिसके आधार पर यह अर्थव्यवस्थाएं विश्व में उच्च स्थान पर पहुंची हैं एवं इस स्थान पर बनी हुई हैं। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में आज भी कई विकसित देश भारत से आगे हैं। इन समस्त देशों के बीच चूंकि भारत की आबादी सबसे अधिक अर्थात 140 करोड़ नागरिकों से अधिक है, इसलिए भारत में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद बहुत कम है। अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 30.51 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 89,110 अमेरिकी डॉलर हैं।

इसी प्रकार, चीन के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 19.23 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 13,690 अमेरिकी डॉलर है और जर्मनी के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 4.74 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 55,910 अमेरिकी डॉलर है। यह तीनों देश सकल घरेलू उत्पाद के आकार के मामले में आज भारत से आगे हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 4.19 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है तथा प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद केवल 2,880 अमेरिकी डॉलर है। भारत के पीछे आने वाले देशों में हालांकि सकल घरेलू उत्पाद का आकार कम जरूर है परंतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में यह देश भारत से बहुत आगे हैं। जैसे जापान के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 4.18 लाख करोड़ है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 33,960 अमेरिकी डॉलर है। ब्रिटेन के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 3.84 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 54,950 अमेरिकी डॉलर है। फ्रान्स के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 3.21 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 46,390 अमेरिकी डॉलर है। इटली के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 2.42 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 41,090 अमेरिकी डॉलर है। कनाडा के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 2.23 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 53,560 अमेरिकी डॉलर है। ब्राजील के सकल घरेलू उत्पाद का आकार 2.13 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद 9,960 अमेरिकी डॉलर है।

सकल घरेलू उत्पाद के आकार के मामले में विश्व की सबसे बड़ी 10 अर्थव्यवस्थाओं में भारत शामिल होकर चौथे स्थान पहुंच जरूर गया है परंतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में भारत इन सभी अर्थव्यवस्थाओं से अभी भी बहुत पीछे है। इस सबके पीछे सबसे बड़े कारणों में शामिल है भारत द्वारा वर्ष 1947 में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात, आर्थिक विकास की दौड़ में बहुत अधिक देर के बाद शामिल होना। भारत में आर्थिक सुधार कार्यक्रमों की शुरुआत वर्ष 1991 में प्रारम्भ जरूर हुई परंतु इसमें इस क्षेत्र में तेजी से कार्य वर्ष 2014 के बाद ही प्रारम्भ हो सका है। इसके बाद, पिछले 11 वर्षों में परिणाम हमारे सामने हैं और भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था से छलांग लगते हुए आज 4थी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। दूसरे, इन देशों की तुलना में भारत की जनसंख्या का बहुत अधिक होना, जिसके चलते सकल घरेलू उत्पाद का आकार तो लगातार बढ़ रहा है परंतु प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद अभी भी अत्यधिक दबाव में है। अमेरिका में तो आर्थिक क्षेत्र में सुधार कार्यक्रम 1940 में ही प्रारम्भ हो गए थे एवं चीन में वर्ष 1960 से प्रारम्भ हुए। अतः भारत इस मामले में विश्व के विकसित देशों से बहुत अधिक पिछड़ गया है। परंतु, अब भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले नागरिकों की संख्या में तेजी से कमी हो रही है तथा साथ ही अतिधनाडय एवं मध्यमवर्गीय परिवारों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, जिससे अब उम्मीद की जानी चाहिए कि आगे आने वाली समय में भारत में भी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में तेज गति से वृद्धि होगी।

विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, अमेरिका में सेवा क्षेत्र इसकी सबसे बढ़ी ताकत है। अमेरिका में केवल 2 प्रतिशत आबादी ही कृषि क्षेत्र पर निर्भर है और अमेरिका की अधिकतम आबादी उच्च तकनीकी का उपयोग करती है जिसके कारण अमेरिका में उत्पादकता अपने उच्चत्तम स्तर पर है। पेट्रोलीयम पदार्थों एवं रक्षा उत्पादों के निर्यात के मामले में अमेरिका आज पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर है। वर्ष 2024 में अमेरिका ने 2.08 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर मूल्य के बराबर का सामान अन्य देशों को निर्यात किया है, जो चीन के बाद विश्व के दूसरे स्थान पर है। तकनीकी वर्चस्व, बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी नवाचार ने अमेरिका को विकास के मामले में बहुत आगे पहुंचा दिया है। टेक्निकल नवाचार से जुड़ी विश्व की पांच शीर्ष कम्पनियों में से चार, यथा एप्पल, एनवीडिया, माक्रोसोफ्ट एवं अल्फाबेट, अमेरिका की कम्पनियां हैं। इन कम्पनियों का संयुक्त बाजार मूल्य 12 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी अधिक है, जो विश्व के कई देशों के सकल घरेलू उत्पाद से बहुत अधिक है। अतः अमेरिका के नागरिकों ने बहुत तेजी से धन सम्पदा का संग्रहण किया है इसी के चलते प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद अमेरिका में बहुत अधिक है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वर्ष 1944 में अमेरिका के ब्रेटन वुड्ज नामक स्थान पर हुई एतिहासिक बैठक में विश्व के 44 देशों ने वैश्विक वित्तीय व्यवस्था के नए ढांचे पर सहमति जताते हुए अपने देश की मुद्रा को अमेरिकी डॉलर से जोड़ दिया था। इसके बाद से वैश्विक अर्थव्यवस्था में अमेरिकी डॉलर का दबदबा बना हुआ है। आज विश्व का लगभग 80 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग लेन देन अमेरिकी डॉलर में होता है।

अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन को पूरे विश्व का विनिर्माण केंद्र कहा जाता है क्योंकि आज पूरे विश्व के औद्योगिक उत्पादन का 31 प्रतिशत हिस्सा चीन में निर्मित होता है। चीन में पूरे विश्व की लगभग समस्त कम्पनियों ने अपनी विनिर्माण इकाईयां स्थापित की हुई हैं। चीन के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण इकाईयों का योगदान 27 प्रतिशत से अधिक हैं। पूरे विश्व में आज उत्पादों के निर्यात के मामले में प्रथम स्थान पर है। विभिन्न उत्पादों का निर्यात चीन की आर्थिक शक्ति का प्रमुख आधार है। सस्ती श्रम लागत के चलते चीन में उत्पादित वस्तुओं की कुल लागत तुलनात्मक रूप से बहुत कम होती है। वर्ष 2024 में चीन का कुल निर्यात 3.57 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक का रहा है। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अर्थात जर्मनी ने पिछले एक वर्ष में 25,000 पेटेंट अर्जित किए हैं। जर्मनी को, ऑटोमोबाइल उद्योग ने, पूरे विश्व में एक नई पहचान दी है। चार पहिया वाहनों के उत्पादन एवं निर्यात के मामले में जर्मनी पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर है। जर्मनी में निर्मित चार पहिया वाहनों का 70 प्रतिशत हिस्सा निर्यात होता है। यूरोपीय यूनियन के देशों की सड़कों पर दौड़ने वाली हर तीसरी कार जर्मनी में निर्मित होती है। जर्मनी विश्व का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश है, जिसने 2024 में 1.66 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर मूल्य के बराबर राशि के उत्पाद एवं सेवाओं का निर्यात किया था। मुख्य निर्यात वस्तुओं में मोटर वाहनों के अलावा मशीनरी, रसायन और इलेक्ट्रिक उत्पाद शामिल हैं।

बिहार में जीत के लिए कांग्रेस फिर से काठ की हांडी के भरोसे

योगेंद्र योगी

लगातार तीसरी बार लोकसभा चुनाव और कई राज्यों में विधानसभा चुनाव हारने से भी कांग्रेस ने कोई सबक नहीं सीखा है। देश में भ्रष्टाचार और विकास के मुद्दे उठाने के बजाए पुराने गढ़े मुर्दे उखाड़ कर अपना खोया हुआ जनाधार फिर से प्राप्त करने की नाकाम कोशिशों में जुटी हुई है। देश की सबसे पुरानी पार्टी को देश के मतदाताओं की नब्ज पकड़ में नहीं आई है। इतने चुनाव हारने के बाद भी कांग्रेस को यह समझ नहीं आया है कि आखिर देश के मतदाता चाहते क्या हैं। मतदाताओं की जरूरतों को समझने के बजाए कांग्रेस सत्ता प्राप्ति के लिए काठ की हांडी को बार-बार चढ़ाने के प्रयास में मात खा रही है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली के आरोपों से यही लगता है कि कांग्रेस के पास मुद्दों की या समझ की कमी हो गई है।

कांग्रेस महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में फर्जीवाड़े का आरोप लगा रही है। आश्चर्य यह है कि यही कांग्रेस जब कर्नाटक, हिमाचल और तेलंगाना में चुनाव जीती तब निर्वाचन प्रक्रिया पर ऐसे आरोप नहीं लगाए। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लेकर फिर एक बड़ा आरोप लगाया। उन्होंने 5 स्टेप में महाराष्ट्र चुनाव में फिक्सिंग की बात कही है। चुनाव आयोग ने राहुल गांधी के आरोपों पर जवाब देते हुए उनके सभी दावों को बेबुनियाद बताया है। उन्होंने एक अग्रेजी अखबार में लिखे अपने लेख के जरिए भाजपा पर आरोप लगाया कि महाराष्ट्र चुनावों में मैच फिक्सिंग की गई और अब कुछ ऐसा ही बिहार में दोहराया जाएगा। राहुल गांधी ने अपने इस लेख को सोशल मीडिया पर शेयर किया। राहुल गांधी ने लिखा कि भाजपा और उसके सहयोगियों ने महाराष्ट्र में चुनाव जीतने के लिए 5 स्टेप की प्लानिंग की थी। कांग्रेस नेता ने यह कहा कि महाराष्ट्र की तरह की मैच फिक्सिंग अगली बार बिहार में होगी, फिर किसी भी राज्य में जहां भाजपा हारती दिख रही हो। राहुल गांधी के इस आरोप पर भाजपा के साथ-साथ जदयू, हम सहित अन्य दलों ने भी कड़ी आपत्ति जताते हुए प्रतिक्रिया दी। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने राहुल गांधी द्वारा 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लोकतंत्र में धांधली करने का ब्लूप्रिंट करार दिये जाने पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि कांग्रेस नेता कई

चुनाव में हार से दुखी और हताश है और इसलिए विचित्र साजिशें रचने का आरोप लगा रहे हैं। भाजपा नेता अमित मालवीय ने कहा कि ऐसा नहीं है कि राहुल गांधी को यह नहीं पता कि चुनावी प्रक्रिया कैसे काम करती है। उन्हें बहुत अच्छे से पता है। लेकिन उनका मकसद स्पष्टता नहीं, बल्कि अराजकता फैलाना है। जेडीयू नेता के सी त्यागी ने कहा कि चुनाव आयोग का जितना दुरुपयोग कांग्रेस ने अपने जमाने में किया है उतना किसी ने नहीं किया। मुख्य चुनाव आयुक्त एम एस गिल को सांसद बनाया और मंत्री बनाया। कांग्रेस पार्टी की जो नीतियां रही हैं पिछड़ों और वंचितों को लेकर उसके चलते उनके वोटो पर पहले ही चोरी नहीं बल्कि डाका पड़ चुका है। त्यागी ने कहा कि बिहार चुनाव से पहले ही राहुल गांधी हार मान चुके हैं। चुनाव आयोग ने अपने जवाब में राहुल गांधी के दावों को निराधार बताया। निर्वाचन आयोग ने राहुल गांधी के आरोपों पर लंबा जवाब दिया है। चुनाव आयोग ने कहा कि चुनाव के फैसले पक्ष में नहीं आने के बाद ऐसे आरोप लगाना बेतुके हैं। 24 दिसंबर 2024 को ही कांग्रेस को भेजे अपने जवाब में ये सभी तथ्य सामने रखे थे, जो चुनाव आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। ऐसा लगता है कि बार-बार ऐसे मुद्दे उठाते हुए इन सभी तथ्यों को पूरी तरह से नजरअंदाज किया जा रहा है। चुनाव आयोग ने यह भी लिखा कि किसी के द्वारा प्रसारित कोई भी गलत सूचना चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त हजारों प्रतिनिधियों की बदनामी तथा चुनाव कर्मचारियों का मनोबल तोडने वाला होता है, जो इस बड़ी कवायद के लिए अथक परिश्रम करते हैं। आयोग ने कहा कि महाराष्ट्र की मतदाता सूची को लेकर लगाए गए निराधार आरोप कानून के शासन का अनादर है। चुनाव आयोग ने यह भी लिखा कि महाराष्ट्र में सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक करीब 6.41 करोड़ मतदाताओं ने वोट दिया। अर्थात हर घंटे औसतन 58 लाख वोट पड़े। इस लिहाज़ से आखिरी दो घंटों में 116 लाख वोट पड़ सकते थे। जबकि आखरि दो घंटों में केवल 65 लाख वोट पड़े जो औसत से काफ़ी कम था। आयोग ने तब कहा था कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव, 2024 से पहले कांग्रेस या किसी अन्य राजनीतिक दल की ओर से कोई शिकायत नहीं थी। गौरतलब है कि इससे पहले कांग्रेस ईवीएम मशीनों से वोटिंग के बजाए बैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग कर चुकी है। कांग्रेस का आरोप था कि ईवीएम मशीनों में हेराफेरी की गई है। सुप्रीम कोर्ट ने अप्रैल 2024 में कई याचिकाओं को खारिज कर दिया था। इन याचिकाओं में चुनाव के दौरान सभी ईवीएम के जरिए डाले गए वोटों का मिलान वोटर-वेरिफिएबल पेपर ऑडिट ट्रेल स्लिप से करने का निर्देश देने की मांग की गई थी। याचिकाओं को खारिज करते हुए सीजेआई खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने बैलेट पेपर सिस्टम पर वापस लौटने की याचिकाकर्ताओं की मांग को कमजोर, प्रतिगामी और अनुचित बताया था। बेंच ने फैसला सुनाया था कि ईवीएम सरल, सुरक्षित और उपयोगकर्ता के अनुकूल हैं। चुनाव हो जाने के करीब एक साल बाद महाराष्ट्र में चुनावी धांधलियों का आरोप लगाने पर यही माना जाएगा कि कांग्रेस गफलत में हैं। यदि चुनावों में गड़बड़ी की शिकायतें हैं भी तो इन्हें अदालतों में चुनौती दी जा सकती है। कांग्रेस को शायद अंदाजा है कि अदालतों में उसके लगाए आरोप टिक नहीं पाएंगे। सवाल यह भी है कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बेईमानी का मुद्दा उठाने वाली कांग्रेस कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल में जीतने के बाद चुप क्यों रही। कांग्रेस ने इन तीनों राज्यों में फिर से मतदान कराने या चुनाव आयोग पर भाजपा के इशारे पर काम करने का आरोप क्यों नहीं लगाया।

'स्वच्छ भारत मिशन में जिले की ऐतिहासिक उपलब्धियां मुख्यमंत्री की कुशल नेतृत्व से बन रही नई मिसाल'

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। देशभर में स्वच्छता को जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ ''स्वच्छ भारत मिशन'' आज केवल एक अभियान नहीं बल्कि भारत के सामाजिक पुनरुत्थान का प्रतीक बन चुका है। 2 अक्टूबर 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर प्रारंभ हुआ यह मिशन आज हर नागरिक के जीवन में गहराई से जुड़ गया है। स्वच्छ भारत का सपना अब मात्र एक नारा नहीं, बल्कि व्यवहार में उतर चुका है।

छत्तीसगढ़ राज्य, जो स्वच्छता के मानकों को लेकर हमेशा प्रतिबद्ध रहा है, आज मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। विशेषकर मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिला ने पिछले 18 महीनों में स्वच्छ भारत मिशन के क्रियान्वयन में पूरे प्रदेश में अग्रणी भूमिका निभाई है।

ह्रष्टापरिवार प्लस मॉडल से ग्राम पंचायत की गांव बना रही नई पहचान

जिले के कुल 391 ग्रामों में से 357 ग्रामों को ह्रष्टापरिवार प्लस मॉडल ग्राम पंचायत की श्रेणी में लाया जाना एक अद्वितीय उपलब्धि है। इसका आशय यह है कि इन गांवों ने न केवल खुले में शौच से मुक्ति प्राप्त की है, बल्कि उन्होंने स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना लिया है। और सबसे अहम बात यह है कि इनमें से 347 ग्रामों का इंटर डिस्ट्रिक्ट फर्स्ट वेरीफिकेशन कार्य भी पूर्ण हो चुका है। यह प्रमाणिकता इस बात की पुष्टि करती है कि यह कार्य महज कागजों में नहीं, बल्कि धरातल पर सार्थक रूप से हुआ है। यह सफलता केवल प्रशासन की नहीं, बल्कि उस सामूहिक चेतना की है जिसने स्वच्छता को अपने जीवन में अपनाया है।

ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन से पर्यावरण के प्रति दिख रही गंभीरता

स्वच्छ भारत मिशन की सफलता का एक प्रमुख आधार ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन है। जिले के सभी 357 ह्रष्टापरिवार प्लस ग्रामों में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन की योजनाएं सुचारू रूप से संचालित की जा रही हैं। यह योजनाएं केवल कचरे के निस्तारण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें कचरे के पुनः उपयोग, जैविक खाद निर्माण और जल नालियों के सुधार जैसे घटक शामिल हैं। समुदाय की सक्रिय सहभागिता के माध्यम से स्वच्छता को व्यवहार में उतारा गया है। स्वच्छता दीवार लेखन, स्वच्छता शपथ, नाटक, रैलियों और बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिताओं के माध्यम से ग्रामीण समाज में जागरूकता बढ़ाई गई है।

सामुदायिक शौचालय से बना सम्मान और सुविधा दोनों का प्रतीक

जिले में अब तक कुल 165 सामुदायिक शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है, जबकि 29 शौचालय प्रगति पर हैं। इन शौचालयों में न केवल स्वच्छता के लिए आवश्यक आधारभूत संरचनाएं मौजूद हैं, बल्कि बिजली और जल की सतत आपूर्ति भी सुनिश्चित की गई है। हर सामुदायिक शौचालय के साथ एक-एक दुकान का निर्माण कर उसे महिला स्व सहायता समूह को सौंपा गया है। इससे न केवल शौचालयों की देखरेख बेहतर हो रही है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार का भी अवसर प्राप्त हो रहा है। यह एक ऐसा मॉडल है जो स्वच्छता और महिला सशक्तिकरण दोनों को एक साथ बढ़ावा दे रहा है।

व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय से घर-घर की बढ़ी गरिमा

स्वच्छ भारत मिशन के तहत जिले में कुल 2000 व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय निर्माण का लक्ष्य रखा गया, जिसमें से अब तक 1275 शौचालय प्रधानमंत्री आवास योजना एवं अन्य स्रोतों के माध्यम से स्वीकृत किए जा चुके हैं। इस दिशा में 104 हितग्राहियों को 12,48,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि DBT (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) के माध्यम से उनके बैंक खातों में दी गई है। यह DBT प्रणाली प्रधानमंत्री मोदी की उस सोच को चरितार्थ करती है जिसमें पारदर्शिता और सीधे लाभ पहुंचाने की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। पारिवारिक शौचालय केवल एक संरचना नहीं, बल्कि ग्रामीण परिवारों की गरिमा, स्वाभिमान और सुरक्षा का प्रतीक बन चुका है।

प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट से प्रदूषण के विरुद्ध एक नया युद्ध

प्लास्टिक अपशिष्ट आज के समय की सबसे बड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक है। इस संकट से निपटने के लिए जिले में तीन अत्याधुनिक प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट की स्थापना की गई है। ये इकाइयाँ जिले की परसगढ़ी, भरतपुर और पौड़ीडीह में स्थित हैं। इनमें से परसगढ़ी और भरतपुर की इकाइयों का संचालन महिला स्व सहायता समूहों द्वारा किया जा रहा है, जो कि इस दिशा में एक अत्यंत प्रगतिशील कदम है। इन यूनिटों में प्लास्टिक कचरे का पृथक्करण, पुनः उपयोग और पुनः चक्रण की प्रक्रियाएं अपनाई जा रही हैं, जिससे पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में मदद मिल रही है। इसके साथ ही जिले में दो एफएसटीपी की स्वीकृति दी गई है। एक मनेन्द्रगढ़ स्थित चैनपुर में पूर्ण हो चुका है, जबकि दूसरा भरतपुर ब्लॉक में स्वीकृत है, जो अभी प्रगति पर है और अगस्त 2025 तक पूर्ण होने की संभावना है। एफएसटीपी के माध्यम से मलजल का वैज्ञानिक और सुरक्षित निस्तारण सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे जल स्रोतों की शुद्धता और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलेगा।

नेतृत्व की दृढ़ता और नीति की सफलता से बन रही जिले की नई पहचान

इन सभी उपलब्धियों के मूल नेतृत्वकर्ता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने जब स्वच्छ भारत मिशन की घोषणा की थी, तब उन्होंने इसे एक सामाजिक क्रांति के रूप में देखा था। आज वह सपना साकार होता दिख रहा है। वहीं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने राज्य में इस अभियान को जिस गंभीरता और पारदर्शिता से लागू किया है, वह अभूतपूर्व है। उनका ग्रामोन्मुखी दृष्टिकोण, योजनाओं की निगरानी के लिए अपनाई गई तकनीकी रणनीतियाँ और स्थानीय निकायों को सशक्त बनाने की नीति ने जिले को स्वच्छता के क्षेत्र में अग्रणी बना दिया है। एमसीबी जिले की उपलब्धियाँ दर्शाती हैं कि यदि नेतृत्व दृढ़ हो, नीति स्पष्ट हो और जनता जागरूक हो, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में यह जिला न केवल स्वच्छता में बल्कि सामाजिक जागरूकता, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण में भी मिसाल बन चुका है।

भाई ने बहन को कुल्हाड़ी से काटकर मार डाला

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में भाई ने अपनी बहन को पहले लात-घूसों से पीटा, फिर कुल्हाड़ी से वार कर उसकी हत्या कर दी। आरोपी ने बीच-बचाव करने आई मां पर भी हमला कर दिया। मां भी बेटी की लाश के पास बेहोश पड़ी मिली। वारदात लैलूंगा थाना क्षेत्र की है।

मिली जानकारी के मुताबिक मृतिका का नाम उर्मिला राठिया (30) है। उर्मिला के बड़े भाई संतकुमार मांझी ने हत्या की है। आरोपी अपनी बहन से आए दिन विवाद करता था। गुरुवार को विवाद बढ़ने पर मर्डर कर दिया। दरअसल, ग्राम राताखंड गांव की रहने वाली उर्मिला राठिया (30) की शादी ग्राम पोरडा में रहने वाले दीपक राठिया से हुई थी। शादी के कुछ साल बाद उसके पति की मौत हो गई थी। उर्मिला अपने मायके में आकर रह रही थी। परिजनों के मुताबिक बड़े भाई संतकुमार मांझी को बहन का मायके में रहना पसंद नहीं था। अक्सर इस बात को लेकर उनके बीच विवाद होता था। बुधवार की सुबह मायके में रहने की बात को लेकर संतकुमार फिर से झगड़ा करने लगा। इससे दोनों के बीच विवाद बढ़ गया। संतकुमार मांझी ने गुस्से में आकर उर्मिला को लात-घूंसों से पीटना शुरू कर दिया। उसे घसीट-घसीटकर मारने लगा। इसके बाद घर में रखे कुल्हाड़ी से उस पर वार कर दिया। खून से लथपथ उर्मिला जमीन पर गिर पड़ी। मां पर भी वार के बाद आरोपी मौके से भाग निकला। आरोपी की मां आसो बाई ने बताया कि जब उसे होश आया तो मामले की सूचना थाने में दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। पोस्टमॉर्टम के बाद डेडबॉडी परिजनों को सौंपा गया है।

बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान हेतु टोल फ्री हेल्पलाइन नम्बर जारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रदेश में आंतरिक सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ बनाने तथा अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान हेतु उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री विजय शर्मा के निर्देश पर पुलिस विभाग द्वारा टोल फ्री हेल्पलाइन नम्बर 1800-233-1905 जारी किया गया है, जो 24 घंटे और सप्ताह के सभी दिनों में सक्रिय रहेगा। इस हेल्पलाइन के माध्यम से राज्य का कोई भी नागरिक, अपने क्षेत्र में मौजूद संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिकों अथवा उनकी गतिविधियों के संबंध में सूचना सीधे पुलिस प्रशासन को दे सकता है। सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी, ताकि लोग बिना किसी भय के राष्ट्रहित में सहयोग कर सकें।

उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने कहा कि देश की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की सुशासन की सरकार राज्य को घुसपैठियों और अवैध गतिविधियों से मुक्त रखने के लिए प्रतिबद्ध है। जब तक ऐसी ताकतों को जड़ से नहीं उखाड़ा जाएगा, तब तक हमारे नागरिकों की सुरक्षा और शांति खतरे में रहेगी। यह हेल्पलाइन आम जनता को एक सीधा, सुरक्षित और प्रभावी माध्यम प्रदान करती है जिससे वे देशहित में अपनी भागीदारी निभा सकें। राज्य में अवैध बांग्लादेशी नागरिको की सूचना पर पूरी ताकत के साथ जांच और पहचान कर रही है।

उपमुख्यमंत्री ने पुलिस विभाग को निर्देश दिए हैं कि वे इस हेल्पलाइन पर प्राप्त हर सूचना को गंभीरता से लें, आवश्यक सतर्कता बरतें और जल्द से जल्द आवश्यक कार्रवाई करें। साथ ही इस अभियान को लेकर आम नागरिकों में जागरूकता फैलाने हेतु प्रचार-प्रसार के निर्देश भी दिए गए हैं। पुलिस विभाग ने यह भी स्पष्ट किया है कि घुसपैठ के मामलों की पुष्टि के लिए प्राप्त सूचनाओं की सत्यता की पूर्ण जांच की जाएगी, ताकि निर्दोष लोगों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने राज्य के सभी नागरिकों से अपील की है कि यदि उन्हें अपने आस-पास किसी संदिग्ध व्यक्ति की गतिविधि अथवा पहचान पर संदेह हो तो वे तुरंत टोल फ्री नम्बर 1800-233-1905 पर संपर्क करें। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम छत्तीसगढ़ को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और सशक्त बनाए रखें।

पनी मौत की अफवाह पर हंसाते हुए कहते थे-टाइगर अभी जिंदा है

पद्मश्री सुरेंद्र दुबे का हार्ट-अटैक से निधन, रायपुर में होगा अंतिम संस्कार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर हास्य कवि पद्मश्री डॉ. सुरेंद्र दुबे का गुरुवार को हार्ट अटैक से निधन हो गया। रायपुर के एडवांस कार्डियक इंस्टीट्यूट में उनका इलाज चल रहा था। दुबे के परिवार के करीबी भाजपा नेता उज्ज्वल दीपक ने सोशल मीडिया पर उनके निधन की जानकारी दी है। हास्य कवि दुबे का अंतिम संस्कार गुरुवार 27 जून को सुबह 10.30 बजे होगा। उनकी अंतिम यात्रा उनके निवास स्थान अशोका प्लेटिनम बंगला नंबर 25 से रायपुर के मारवाड़ी श्मशान घाट तक जाएगी। कार्डिएक इंस्टीट्यूट के डॉ. स्मित श्रीवास्तव ने बताया कि उन्हें हार्ट अटैक आया था। जांच में पाया गया कि उनकी दिल की नसों में ब्लॉकेज है। एंजियोप्लास्टी सफल रही। उसके बाद वह ठीक थे, लेकिन शायद आईसीयू में विचलित थे। घबराहट की वजह से कोलेप्स हो गए थे, लेकिन फौरन उन्हें रिवाइव किया गया। किडनी का फंक्शन वापस आ गया था। ब्लड प्रेशर सही हो गया था, लेकिन दोपहर में फिर से एक कार्डिएक अरेस्ट आया। उन्हें दो कार्डिएक अरेस्ट आए और फिर उनका निधन हो गया।

डॉ. सुरेंद्र दुबे के निधन पर कवि कुमार विश्वास, राज्यपाल रामेन डेका, सीएम विष्णुदेव साय, गृहमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप, पूर्व ष्टरूभूपेश बघेल और मीर अली मीर समेत कई बड़ी हस्तियों ने दुख जताया है। लिखा पूरे परिवार को ईश्वर इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। ओम शांति। सीएम विष्णुदेव साय ने निधन पर दुख जताया है। उन्होंने लिखा कि छत्तीसगढ़ी साहित्य व हास्य काव्य के शिखर पुरुष, पद्मश्री डॉ. सुरेन्द्र दुबे जी का निधन साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। अचानक मिली उनके निधन की सूचना से स्तब्ध हूं।

अपने विलक्षण हास्य, तीक्ष्ण व्यंग्य और अनूठी रचनात्मकता से उन्होंने न केवल देश-विदेश के मंचों को गौरवान्वित किया, बल्कि छत्तीसगढ़ी भाषा को वैश्विक पहचान दिलाने में भी अहम भूमिका निभाई।जीवनपर्यंत उन्होंने समाज को हंसी का उजास दिया, लेकिन आज उनका जाना हम सभी को गहरे शोक में डुबो गया है। उनकी जीवंतता, ऊर्जा और साहित्य के प्रति समर्पण सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

कवि कुमार विश्वास ने ट्वीट कर दुख जताया है। उन्होंने लिखा है कि, छत्तीसगढ़ी भाषा, संस्कृति के वैश्विक राजदूत, मुझे सदैव अनुजवत स्नेह देने वाले, बेहद जिंदादिल मनुष्य, कविश्रेष्ठ पद्मश्री डॉ सुरेंद्र दुबे जी का निधन सम्पूर्ण साहित्य-जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। इसके साथ ही गृहमंत्री विजय शर्मा ने भी दुख जताया है। उन्होंने लिखा कि सुरेन्द्र जी जीवन भर मुस्कान बांटते रहे, आज आंखें नम कर गए। छत्तीसगढ़ की माटी से लेकर विश्व मंच तक अपनी विशिष्ट कविताओं से पहचान बनाने वाले महान कवि पद्मश्री सुरेन्द्र दुबे जी के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें एवं शोक संतप्त परिजनों और उनके असंख्य प्रशंसकों को यह पीड़ा सहने की शक्ति प्रदान करें। आपकी कविताएं सदैव हमारे हृदय में जीवित रहेंगी। ? शांति।

छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने भी दुख जताया है। उन्होंने कहा कि सुरेंद्र दुबे जी एक जिंदादिल इंसान थे। छत्तीसगढ़ की संस्कृति छत्तीसगढ़ के साहित्य और छत्तीसगढ़ के भाव को पूरे देश नहीं बल्कि पूरी दुनिया तक उन्होंने पहुंचाने का काम किया।

गांव के हैंडपंप की मरम्मत और क्लोरीनीकरण कर कराया गया शुद्ध पेयजल उपलब्ध

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मानसून की दस्तक के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या देखने को मिलती है। कही साफ पानी नहीं मिलता तो कही नदी नाले का पानी पीने के लिए ग्रामीण विवश होते है। इन्हीं कारणों को देखते हुए जिला कलेक्टर के निर्देश पर लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सक्रियता बढ़ा दी है। विभाग द्वारा बारिश के मौसम में जल जनित रोगों की रोकथाम के लिए बंद और खराब पड़े हैंडपंपों की मरम्मत और क्लोरीनीकरण का कार्य युद्धस्तर पर किया जा रहा है। इसी क्रम में जिले के मनेंद्रगढ़ विकास खण्ड के ग्राम पंचायत डाडहंसवाही में बंद पड़े हैंडपंप की मरम्मत कर उसे पुनः चालू किया गया। उसमें क्लोरीनेशन की प्रक्रिया पूरी करे ग्रामीणों को स्वच्छ और सुरक्षित जल उपलब्ध कराया गया। मरम्मत कार्य पूर्ण होते ही ग्रामीणों को जल आपूर्ति होने लगी है। जिससे उन्हें बारिश के इस मौसम में शुद्ध पेयजल के लिए अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

रीवा/सतना की खबरें

धान और हाइब्रिड धान में खाद के संतुलित उपयोग की सलाह

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने किसानों को धान और हाइब्रिड धान में खाद के संतुलित उपयोग की सलाह दी है। उप संचालक ने कहा है कि सभी किसान अपने खेत की माटी की जाँच करा लें। इससे प्राप्त मृदा स्वास्थ्य कार्ड में खेत की माटी में पाए जाने वाले पोषक तत्वों और कमी की जानकारी दर्ज रहती है। साथ ही उसमें फसल के अनुसार खाद के संतुलित उपयोग की भी मात्रा लिखी रहती है। उसी के अनुसार खाद का उपयोग करें। अधिक मात्रा में खाद का उपयोग किसान के लिए आर्थिक बोझ होने के साथ-साथ फसल और मिट्टी के लिए भी हानिकारक होता है। धान की सामान्य किस्म के लिए प्रति हेक्टेयर चार बैग चार किलो यूरिया और एक बैग 37 किलो डीएपी का उपयोग करें। इसके विकल्प के रूप में चार बैग 37 किलो यूरिया और पाँच बैग सिंगल सुपर फास्फेट अथवा चार बैग पाँच किलो यूरिया और दो बैग 25 किलो 12:32:16 खाद का उपयोग कर सकते हैं। इसके अन्य विकल्प के रूप में चार बैग तीन किलो यूरिया, तीन बैग सिंगल सुपर फास्फेट और दो बैग 16:16:16 खाद का उपयोग भी किया जा सकता है। उप संचालक ने बताया कि शंकर अथवा हाइब्रिड धान के लिए 22 किलो यूरिया एवं दो बैग 9 किलो डीएपी का उपयोग करें। इसके विकल्प के रूप में पाँच बैग 36 किलो यूरिया एवं सात बैग 25 किलो सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग किया जा सकता है। इसके तीसरे विकल्प के रूप में तीन बैग 33 किलो यूरिया तथा तीन बैग 38 किलो 12:32:16 खाद अथवा चार बैग 16 किलो यूरिया, तीन बैग 20:20:0:13 तथा तीन बैग 38 किलो सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग करें। इसके एक अन्य विकल्प के रूप में पाँच बैग 29 किलो यूरिया, तीन बैग् 16:16:16 एवं तीन बैग 25 किलो सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग कर सकते हैं। फसलों में खाद के संतुलित उपयोग से ही अच्छी फसल प्राप्त होगी।

नजूल निर्वर्तन समिति की बैठक स्थगित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।संभागीय नजूल भूमि निर्वर्तन समिति की 27 जून को कमिश्नर कार्यालय में प्रस्तावित बैठक अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दी गई है। बैठक की आगामी तिथि की पृथक से सूचना दी जाएगी।

अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों को नीट, क्लैट और जेईई की कोचिंग का अवसर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अनुसूचित जाति एवं जनजातीय कार्य विभाग द्वारा अनुसूचित जनजाति के मध्यप्रदेश के मूल निवासी विद्यार्थियों को नीट, क्लैट और जेईई प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निःशुल्क कोचिंग की सुविधा दी जा रही है। आकांक्षा योजना के तहत कक्षा 10वीं 60 प्रतिशत से अधिक अंकों से उत्तीर्ण कर कक्षा 11वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को यह सुविधा दी जा रही है। इस संबंध में जिला संयोजक कमलेश्वर सिंह ने बताया कि आकांक्षा योजना के तहत जेईई की कोचिंग के लिए भोपाल में दो सौ सीट उपलब्ध हैं। नीट की कोचिंग के लिए इंदौर में दो सौ सीटें उपलब्ध हैं तथा क्लैट की कोचिंग के लिए जबलपुर में दो सौ सीटें उपलब्ध हैं। अनुसूचित जनजाति के चुने हुए विद्यार्थियों को कोचिंग की निःशुल्क सुविधा के साथ आवास, पुस्तकें, स्टेशनरी, टैबलेट तथा इंटरनेट डेटा प्लान की भी निःशुल्क सुविधा दी जाएगी। कोचिंग की अवधि दो वर्ष की होगी। निर्धारित कोचिंग संस्थानों द्वारा प्रवेश परीक्षा के माध्यम से मेरिट के अनुसार विद्यार्थियों का चयन किय जाएगा। इसके लिए कक्षा 10वीं उत्तीर्ण जनजाति के विद्यार्थी एमपीटॉस पोर्टल ट्राईबल डॉट एमपी डॉट जीओभी डॉट इन में ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इस संबंध में हेल्पलाइन टोल फ्री नम्बर 18002333951 पर संपर्क कर अन्य जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

त्रैमासिक सत्यापन के लिए आज खुलेगा ईव्हीएम वेयरहाउस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार ईव्हीएम वेयरहाउस का प्रत्येक त्रैमास में सत्यापन किया जाता है। रीवा में 27 जून को त्रैमासिक सत्यापन के लिए शाम 5 बजे ईव्हीएम वेयरहाउस कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रतिभा पाल की उपस्थिति में खोला जाएगा। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रेयस गोखले ने सभी मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से इस अवसर उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

जल गंगा संवर्धन अभियान से प्राचीन बावड़ी को मिला पुर्नजीवन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान प्राचीन जल स्त्रोतों के पुर्नरूद्धार के लिये वरदान साबित हो रहा है। इस अभियान से ऐतिहासिक व प्राचीन कुओं, बावड़ियों, जलाशयों, छोटे-छोटे सरोबरों आदि के पुर्नरूद्धार के कार्य किये गये। जल को संरक्षित करने में यह अभियान मददगार साबित हुआ। जिले के खजुहा कला में जनसहयोग एवं जन अभियान परिषद के पर्यावरण वाहिनी संस्था के प्रयासों से प्राचीन बावड़ी को नया जीवन मिला। यह बावड़ी सूखी हुई था तथा इसमें झाड-झंखाड उग आये थे। जल गंगा संवर्धन अभियान में इसकी साफ सफाई हुई और अब वर्षाकाल में इसमें जल संग्रहण हो रहा है। ग्रामवासी प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को ह्रदय से धन्यवाद देते हुए जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रशंसा कर रहे हैं। वह कहते हैं कि मुख्यमंत्री जी की सोच से यह अभियान संचालित हुआ और जल संरक्षण के कार्य कराये गये।

रीजनल इंडस्ट्री स्किल एण्ड इम्प्लायमेंट कॉन्क्लेव आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा 27 जून को मोहन सभागार में रीजनल इंडस्ट्री स्किल एण्ड इम्प्लायमेंट कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम सुबह 11 बजे आरंभ होगा। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का रतलाम से वर्चुअली उद्बोधन होगा। प्रभारी कलेक्टर डॉ सौरभ सोनवड़े ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए विभिन्न अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी है। कार्यक्रम के लिए संपूर्ण व्यवस्थाएं तथा उद्यमियों की भागीदारी के लिए कार्यकारी संचालक एमपीआईडीसी यूके तिवारी को प्रभारी बनाया गया है। अग्रणी बैंक प्रबंधक को बैंको से स्वरोजगार योजनाओं के ऋण प्रकरण स्वीकृत कराकर कार्यक्रम में वितरण के निर्देश दिए गए हैं। जिला प्रबंधक ग्रामीण आजीविका परियोजना को स्वसहायता समूहों की कार्यक्रम में भागीदारी एवं पाँच हितग्राहियों को हितलाभ वितरण की जिम्मेदारी दी गई है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी अन्त्यावसायी सहकारी विकास निगम, जिला प्रबंधक खादी ग्रामोद्योग, जिला संयोजक आदिमजाति कल्याण विभाग, सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग, उप संचालक पशुपालन, सहायक संचालक उद्यानिकी, उप संचालक मछली पालन तथा महाप्रबंधक उद्योग को उनके विभाग की स्वरोजगार योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों को कार्यक्रम में हितलाभ वितरण की जिम्मेदारी दी गई है। प्राचार्य आईटीआई पीएम विश्वकर्मा योजना के हितग्राहियों तथा परियोजना अधिकारी शहरी विकास अभिकरण को पीएम स्वनिधि योजना के हितग्राहियों के हितलाभ वितरण के निर्देश दिए गए हैं।

कृषक संजय सिंह अब धस्प्रकलर से करेंगे सिंचाई, पानी की होगी बचत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।जल गंगा संवर्धन अभियान जल के संरक्षण के साथ ही पानी के कम से कम उपयोग का अभियान है। इस अभियान में विभिन्न विभाग जल संरक्षण व जल की बचत के लिये कार्य कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में कृषि विभाग द्वारा किसानों को कम पानी से अधिक सिंचाई के उद्देश्य से धस्प्रकलर सेट प्रदान किये गये हैं। जिले के बरहदी ग्राम निवासी कृषक संजय सिंह को अभियान के दौरान कृषि विभाग द्वारा 10 नग धस्प्रकलर नोजल एवं 60 नग पाइप प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजनान्तर्गत प्रदान किये गये।

हिमाचल में 5 जगह बादल फटने से नदी-नालों में बाढ

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में एमपी, राजस्थान और गुजरात समेत सभी राज्यों में बारिश का सिलसिला जारी है। पिछले 24 घंटों में सबसे ज्यादा नुकसान हिमाचल में हुआ है। कुल्लू जिले में एक दिन पहले 5 जगह- जीवा नाला (सैंज), शिलागढ़ (गढ़सा) घाटी, स्त्रो गैलरी (मनाली), होरनगढ़ (बंजार), कांगड़ा और धर्मशाला के खनियारा में बादल फटने से अब तक 5 लोगों की मौत हो गई। जबकि 7 से ज्यादा लापता हैं। सबसे ज्यादा नुकसान सैंज में जीवा नाला के नजदीक एनएचपीसी के प्रोजेक्ट साइट पर हुआ। यहां गुरुवार दोपहर तक 4 और लोगों के शव बरामद हुए। बताया जा रहा है 15 से 20 लोग बह गए हैं, लेकिन इनकी अब तक पुष्टि नहीं हुई है। उधर, गुजरात के अहमदाबाद, सूरत और नवसारी जिलों में तेज बारिश हो रही है। अहमदाबाद में बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। पूर्वी क्षेत्र के मणिनगर, वटवा, सिटीएम, हाटकेश्वर, निकोल ओधव और विराट नगर समेत कई इलाकों में पानी भर गया है। मध्यप्रदेश के 15 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट है। इंदौर में बारिश के बाद अंधेरा छा गया। जबलपुर-विदिशा में घरों में पानी घुस गया। राजस्थान के अलवर में बांध पर सेल्फी ले रहे युवक की डूबने से मौत हो गई। जयपुर, सीकर-नागौर समेत 6 जिलों में तेज बारिश हुई।

जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में एनकाउंटर, 1 आतंकी मारा गया

उधमपुर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में बसंतगढ़ इलाके में गुरुवार सुबह से जारी एनकाउंटर में एक आतंकी मारा गया है। इलाके में तीन और आतंकियों के छिपे होने की आशंका है। सेना और पुलिस का सर्च ऑपरेशन जारी है। आईजीपी जम्मू जोन भीम सेन ने बताया कि बसंतगढ़ के बिहाली इलाके में पिछले एक साल से 4 आतंकियों के छिपे होने की खबर थी। गुरुवार सुबह साढ़े 8 बजे इनकी जानकारी मिलने के बाद सर्च ऑपरेशन चलाया गया इस दौरान आतंकियों ने सिक्योरिटी फोर्सेज के जवानों पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में एक आतंकी मारा गया है। सोर्स के अनुसार, इलाके में 3 और आतंकी हैं। दोनों तरफ से फायरिंग जारी है 23 अप्रैल को बारामूला के उरी सेक्टर में एलओसी के पास आतंकी घुसपैठ की कोशिश की गई थी। सेना ने 2 आतंकवादियों को मार गिराया। सेना के अधिकारियों ने कहा कि सुरक्षा बलों ने 2-3 आतंकियों को घुसपैठ की कोशिश करते देखा था।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश- ब्लैक बॉक्स का डेटा रिकवर हुआ

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद में 12 जून को क्रैश हुए एअर इंडिया विमान के ब्लैक बॉक्स के डेटा को रिकवर कर लिया गया है। सरकारी बयान में गुरुवार को बताया गया कि डेटा डाउनलोड हो गया है। मेमोरी मॉड्यूल का एक्सेस भी मिल गया है। अब जांच एजेंसी ब्लैक बॉक्स से रिकवर हुए डेटा का विश्लेषण (एनालिसिस) करेगी। इससे हादसे के कारणों का पता चलेगा।

70 साल से अधिक आयु के लोकतंत्र सेनानियों को आयुष्मान कार्ड से निःशुल्क इलाज और आवश्यकता अनुसार एबुलेंस सेवा की सुविधा भी दी जाएगी-मुयमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लोकतंत्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह केवल एक शासन प्रणाली नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली की आत्मा और पहचान है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र भारतीय जनमानस में पुराकाल से रचा-बसा है और इसकी जड़ें हमारी परंपराओं में गहराई तक फैली हुई हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास में लोकतंत्र सेनानियों के प्रादेशिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने लोकतंत्र की मजबूती में लोकतंत्र सेनानियों के अमूल्य योगदान की सराहना करते हुए कहा कि हमारा वर्तमान लोकतंत्र उनके अनथक संघर्ष और बलिदान का ही परिणाम है। आज हम एक मजबूत और जवाबदेह लोकतांत्रिक व्यवस्था में जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इसके मूल में लोकतंत्र सेनानी ही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकतंत्र शासन को जवाबदेह बनाता है, नागरिकों को अधिकार देता है और प्रत्येक व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है। लोकतांत्रिक प्रणाली ही हमारी विविधता में एकता को बनाए रखने का आधार है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी का आह्वान किया कि लोकतंत्र की इस विरासत को आगे बढ़ाना हम सबका नैतिक दायित्व है। उन्होंने

कहा कि हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। दुनिया हमारी ओर हैरत से देखती है कि यहां लोकतंत्र की जड़ें कितनी गहरी हैं। भारत देश सच्चे अर्थों में लोकतंत्र का जनक है। उन्होंने कहा कि हम सब लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने वाली विरोधी ताकतों से मिलकर लड़ेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने लोकतंत्र सेनानियों के हित में घोषणा करते हुए कहा कि अब 70 साल से अधिक आयु के सभी लोकतंत्र सेनानियों को आयुष्मान कार्ड के माध्यम से निःशुल्क इलाज और आवश्यकता पड़ने पर पीएम एयर एम्बुलेंस की सुविधा भी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2025 को रोजगार एवं उद्योग वर्ष के रूप में मनाने का फैसला किया है। प्रदेशवासियों के जीवन में उजाला लाने के लिए सरकार नित नई योजनाएं लेकर आ रही हैं।

पात्र होने पर लोकतंत्र सेनानियों

तेजस्वी के कार्यक्रम में भीड़ बेकाबू, गेट के शीशे टूटे

पटना (एजेंसी)। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव गुरुवार को पटना के बापू सभागार में आयोजित छात्र-संवाद संसद कार्यक्रम में पहुंचे थे। कार्यक्रम खत्म होने के बाद तेजस्वी के साथ सेल्फी लेने के लिए युवाओं की भीड़ जुट गई। भीड़ इतनी बेकाबू हो गई कि बापू सभागार के गेट का शीशा टूट गया। वीवीआईपी एंट्री गेट पूरी तरह से टूटकर चकनाचूर हो गया। मौके पर हंगामा मच गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए तेजस्वी ने युवाओं से पूछा, सरकार बदलना है न। मंच से मैं संदेश देना चाहता हूं कि हमारा विजन क्या है।

थरूर पर कांग्रेस सांसद बोले-परिंदे को आसमान देखना पड़ता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी की तारीफ के बाद कांग्रेस नेता शशि थरूर की अपनी ही पार्टी के साथ मतभेद की स्थिति बन रही है। अब तमिलनाडु के विरुधुनगर से कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने थरूर के आजाद पक्षी वाले पोस्ट पर तंज कसा है। टैगोर ने एक्स पर शिकारी पक्षी (बर्ड्स ऑफ प्रे) पोस्टर के साथ लिखा- आज के समय में एक आजाद परिंदे को भी उड़ने से पहले आसमान देखना पड़ता है। क्योंकि बाज, गिद्ध और ईगल जैसे शिकारी हर वक्त शिकार की तलाश में रहते हैं। आजादी अब मुफ्त नहीं है, खासकर जब शिकारी देशभक्ति के पंख लगाकर उड़ते हैं। दरअसल एक दिन पहले बुधवार को थरूर ने एक्स पोस्ट में लिखा था- उड़ने की इजाजत मत मांगो। पंख तुम्हारे अपने हैं और आसमान किसी एक का नहीं है। सोमवार को द हिंदू में पब्लिश एक आर्टिकल में थरूर ने लिखा था कि मोदी की ऊर्जा, गतिशीलता और जुड़ने की इच्छा वैश्विक मंच पर भारत के लिए प्रमुख संपत्ति बनी हुई है

पद्मश्री सुरेंद्र दुबे का हार्ट-अटैक से निधन

रायपुर (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर हास्य कवि पद्मश्री डॉ. सुरेंद्र दुबे का गुरुवार को निधन हो गया। खबर है कि उन्हें हार्ट अटैक आया है। रायपुर के एडवांस कार्डियक इंस्टीट्यूट में उनका इलाज चल रहा था। दुबे के परिवार के करीबी भाजपा नेता उज्ज्वल दीपक ने सोशल मीडिया पर उनके निधन की जानकारी दी है। डॉ, सुरेंद्र दुबे के निधन पर कवि कुमार विश्वास, राज्यपाल रामेन डेका, सीएम विष्णुदेव साय, गृहमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप, पूर्व सीएम भूपेश बघेल और मीर अली मीर समेत कई बड़ी हस्तियों ने दुख जताया है। लिखा पूरे परिवार को ईश्वर इस आघात को सहन करने

की शक्ति प्रदान करे। ओम शांति। सीएम विष्णुदेव साय ने निधन पर दुख जताया है। उन्होंने लिखा कि छत्तीसगढ़ी साहित्य व हास्य काव्य के शिखर पुरुष, पद्मश्री डॉ. सुरेन्द्र दुबे जी का निधन साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। अचानक मिली उनके निधन की सूचना से स्तब्ध हूं।

कांग्रेस बोली- चुनाव आयोग वोटर्स लिस्ट की डिजिटल कॉपी दे

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र चुनाव 2024 में गड़बड़ी के आरोपों को लेकर कांग्रेस ने इलेक्शन कमीशन को लेटर लिखा है। पार्टी ने आयोग से एक हफ्ते में महाराष्ट्र चुनाव की डिजिटल वोटर्स लिस्ट मांगी है। साथ ही महाराष्ट्र और हरियाणा के वोटिंग डे की वीडियो फुटेज देने को कहा है। पार्टी ने कहा कि यह पुरानी मांग है और आयोग इसे आसानी से दे सकता है। डेटा मिलने पर वे अपना एनालिसिस करेंगे और चुनाव आयोग से चर्चा करेंगे।

दरअसल, 12 जून को इलेक्शन कमीशन ने राहुल को लेटर लिखा था। इसमें राहुल को विधानसभा चुनाव में धांधली के उनके आरोपों पर चर्चा के लिए बुलाया गया था।

इसी के जवाब में कांग्रेस ने आयोग को लेटर लिखा है। चुनाव आयोग ने कहा था- देश में चुनाव पारदर्शी होते श्रेष्ट ने 12 जून को राहुल को भेजे लेटर में लिखा था कि भारत की संसद के पारित इलेक्टोरल लॉ, उसके नियमों और समय-समय पर चुनाव आयोग के निर्देशों के जरिए बहुत सख्ती से देश में चुनाव आयोजित कराए जाते हैं। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव प्रक्रिया विधानसभा क्षेत्र स्तर पर सेंट्रलाइज्ड आयोजित की जाती है।

रुद्रप्रयाग में नदी में ट्रैवलर गिरी, 9 लापता,3 की मौत और 8 घायल

रुद्रप्रयाग (एजेंसी)। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में अलकनंदा नदी में ट्रैवलर गिर गई। हादसा घोलतीर में बद्रीनाथ हाईवे पर हुआ। ट्रैवलर में 20 लोग सवार थे, इनमें से 3 की मौत हो गई है, जबकि 8 घायल हैं। वहीं, 9 लोग अभी भी लापता हैं। ट्रैवलर में राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के यात्री बैठे थे। ट्रैवलर सवार 20 लोगों के नाम, पता जारी किए गए हैं। तीन मृतकों में से 2 की पहचान एमपी के राजगढ़ निवासी विशाल सोनी (42) और गुजरात में आईमाता चौक सूरत निवासी ड्रिमी (17) के रूप में हुई है। ड्राइवर सुमित ने बताया- वह यात्रियों को केदारनाथ से दर्शन कराकर बद्रीनाथ धाम ले जा रहे थे। इस बीच रुद्रप्रयाग में घोलतीर के पास एक ट्रक ने पीछे से ट्रैवलर को टक्कर मार दी। इससे मिनी ट्रैवलर अलकनंदा में जा गिरी। सुमित हरिद्वार के रहने वाले हैं। इन्हें भी गंभीर चोट आई है। इनका इलाज रुद्रप्रयाग अस्पताल में किया जा रहा है। एसडीआरएफ के जवान श्रीनगर, गढ़वाल में बांध के पास तलाशी अभियान चला रहे हैं, जो रुद्रप्रयाग बस दुर्घटना स्थल से 40 किलोमीटर दूर है।

गहलोत बोले- शाह-शेखावत-प्रधान ने हमारी पार्टी में पैसे बांटे थे

जोधपुर (एजेंसी)। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा- नरेंद्र मोदी सरकार में अमित शाह, धर्मेंद्र प्रधान और गजेंद्र सिंह शेखावत ने मिलकर राजस्थान सरकार को गिराने का षड्यंत्र किया था, जिसे विफल कर दिया गया। हिंदुस्तान में एकमात्र हमारी सरकार थी, जिसे नहीं गिरा पाए। गहलोत ने गुरुवार को जोधपुर में मीडिया से ये बात कही। मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र में सरकारें बदल दीं, लेकिन राजस्थान में नाकाम रहे। इन लोगों ने हमारी पार्टी के अंदर पैसे बांटे। इसके प्रूफ मेरे पास हैं। जिस प्रकार के हालात उन्होंने बनाए, क्या वह संविधान के अनुरूप है? आज यही लोग संविधान

दिवस मना रहे हैं। हॉर्स ट्रेडिंग का जिक्र करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा- महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्यप्रदेश में विधायकों को खरीदने के लिए कितना पैसा बांटा होगा, आप कल्पना नहीं कर सकते।

अमरनाथ यात्रा की तैयारियां परखने सुरक्षा बलों की मॉक ड्रिल

श्रीनगर (एजेंसी)। 3 जुलाई से शुरू हो रही अमरनाथ यात्रा की तैयारी के लिए बुधवार को बालटाल बेस कैंप में सुरक्षा बलों ने मॉक ड्रिल की। जिसमें जम्मू-कश्मीर पुलिस, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ , 49 बटालियन सीआरपीएफ, सेना, स्वास्थ्य विभाग और फायर बिग्रेड समेत कई एजेंसियों ने हिस्सा लिया। ये सभी संभावित आतंकी हमलों, प्राकृतिक आपदाओं के आने पर तीर्थयात्रियों को सुरक्षित निकालने की तैयारियों की जांच कर रहे थे। इधर, इस साल अमरनाथ यात्रा को लेकर सुरक्षा एजेंसियों ने यात्रा रूट के जंगलों में बने ढोक (झोपड़ियों) की प्रोफाइलिंग व जियो टैगिंग शुरू की है। वन विभाग पुलिस वैरिफिकेशन के बिना यात्रा रूट पर अब किसी ढोक को बनाने की परमिशन नहीं देगा। संदिग्ध ढोकों पर यूएवी सर्विलांस, मोबाइल जैमर तथा एआई-सक्षम ट्रैकिंग लागू की जा रही है।

शाह बोले- किसी विदेशी भाषा का विरोध नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को नई दिल्ली में राजभाषा विभाग के कार्यक्रम में कहा- किसी भी भाषा का विरोध नहीं है। किसी विदेशी भाषा से भी कोई विरोध नहीं करना चाहिए। लेकिन आग्रह हमारी भाषा को बोलने, उसे सम्मान देने और हमारी भाषा में सोचने का होना चाहिए। शाह ने आगे कहा- मैं मन से मानता हूं कि हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की विरोध नहीं हो सकती। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है। हिंदी और सभी भारतीय भाषाएं मिलकर हमारे आत्मगौरव के अभियान को उसकी मंजिल तक पहुंचा सकती हैं। इससे पहले 19 जून को केंद्रीय

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा था- इस देश में जो लोग अंग्रेजी बोलते हैं, उन्हें जल्द ही शर्म आएगी। ऐसे समाज का निर्माण दूर नहीं है। अपना देश, अपनी संस्कृति, अपना इतिहास और अपने धर्म को समझने के लिए कोई भी विदेशी भाषा पर्याप्त नहीं हो सकती। हमारी भाषाएं भारत को एकजुट करेंगी- पिछले कुछ दशकों में भाषा का इस्तेमाल भारत को बांटने के साधन के रूप में किया गया। वे इसे तोड़ नहीं पाए, लेकिन प्रयास किए गए। हम सुनिश्चित करेंगे कि हमारी भाषाएं भारत को एकजुट करने का सशक्त माध्यम बनें। इसके लिए राजभाषा विभाग काम करेगा। भारतीय भाषाओं का विकास करेंगे- मेरा मानना है कि पीएम मोदी के नेतृत्व में जो नींव रखी जा रही है, उससे 2047 में एक महान भारत का निर्माण होगा और महान भारत के निर्माण की राह पर हम अपनी भारतीय भाषाओं का विकास करेंगे।

सीजेआई बोले- संसद नहीं, संविधान सबसे ऊपर

अमरावती (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने बुधवार को कहा कि भारत का संविधान सबसे ऊपर है। हमारे लोकतंत्र के तीनों अंग (न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका) संविधान के अधीन काम करते हैं। सीजेआई गवई ने कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि संसद सर्वोच्च है, लेकिन मेरी राय में संविधान सर्वोपरि है। सुप्रीम कोर्ट के 52वें सीजेआई के रूप में शपथ लेने वाले जस्टिस गवई होमटाउन अमरावती में अपने अभिनंदन समारोह में बोल रहे थे। सीजेआईगवई ने कहा कि संसद के पास संशोधन करने की शक्ति है, लेकिन वह संविधान के मूल ढांचे को बदल नहीं सकती।

सीजेआई गवई ने कहा कि एक जज को हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारा एक कर्तव्य है और हम नागरिकों के अधिकारों और संवैधानिक मूल्यों और सिद्धांतों के संरक्षक हैं।

शुभांशु 28 घंटे सफर करके इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंचे

फ्लोरिडा (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला सहित चार एस्ट्रोनॉट आज यानी, 26 जून को शाम 4:01 बजे इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंच गए। 28 घंटे के सफर के बाद वे ड्रैगन पहुंचे हैं। करीब 6 बजे स्पेस स्टेशन का हैच खुला और सभी एस्ट्रोनॉट आईएसएस के अंदर दाखिल हुए। शुभांशु आईएसएस पर जाने वाले पहले और स्पेस में जाने वाले दूसरे भारतीय हैं। इससे 41 साल पहले राकेश शर्मा ने 1984 में सोवियत यूनियन के स्पेसक्राफ्ट से अंतरिक्ष यात्रा की थी।

इससे पहले दिन में क्रू ने स्पेसक्राफ्ट से लाइव बातचीत की। इसमें शुभांशु ने कहा- नमस्कार फ्रॉम स्पेस! यहां एक बच्चे की तरह सीख रहा हूं... अंतरिक्ष में चलना और खाना कैसे है।एक्सियम मिशन 4 के तहत 25 जून को दोपहर करीब 12 बजे सभी एस्ट्रोनॉट आईएसएस के लिए रवाना हुए थे। स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट से जुड़े ड्रैगन कैप्सूल में इन्होंने कैनेडी स्पेस सेंटर से उड़ान भरी।

एससीओ में पाकिस्तानी रक्षा मंत्री से नहीं मिले राजनाथ

शंघाई (एजेंसी)। चीन के किंगदाओ में गुरुवार को शंघाई सहयोग संगठन के रक्षा मंत्रियों की बैठक हुई। इसमें भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और पाकिस्तान के रक्षामंत्री ख्वाजा आसिफ, दोनों शामिल हुए थे। हालांकि, राजनाथ सिंह ने पाकिस्तानी रक्षा मंत्री से मुलाकात नहीं की। उन्होंने एससीओके जॉइंट स्टेटमेंट पर साइन करने से भी इनकार कर दिया। क्योंकि उसमें जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले को शामिल नहीं किया गया था, जबकि पाकिस्तान के बलूचिस्तान में हुई आतंकी घटना का जिक्र था। भारत ने इससे नाराजगी जाहिर की। राजनाथ सिंह ने बैठक में कहा, कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को अपनी नीति मानते हैं।

वे आतंकवादियों को पनाह देते हैं। फिर इसे इनकार करते हैं। ऐसे डबल स्टैंडर्ड के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्हें समझना होगा कि

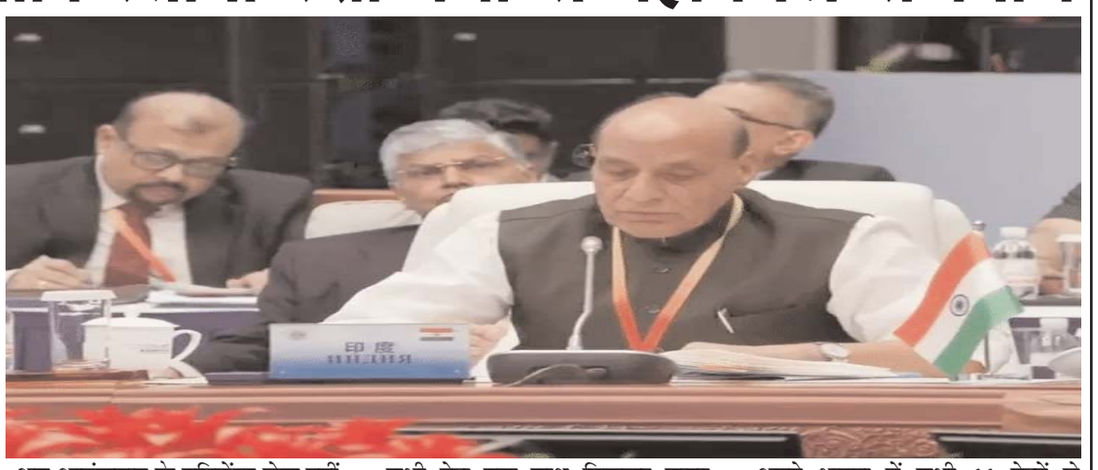

अब आतंकवाद के एपिसेंटर सेफ नहीं हैं। एससीओ को ऐसे देशों की आलोचना करने में संकोच नहीं करना चाहिए। विदेश मंत्रालय बोला- एक खास देश को भारत की बात मंजूर नहीं थी दिल्ली में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि शंघाई सहयोग संगठन के रक्षा मंत्रियों की दो दिन चली बैठक में सभी देश एक साथ मिलकर साझा बयान पर सहमत नहीं हो सके, इसलिए उस दस्तावेज को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, भारत चाहता था कि इस बयान में आतंकवाद और उससे जुड़ी चिंताओं को साफ तौर पर शामिल किया जाए, लेकिन एक खास देश को यह बात मंजूर नहीं थी। भारत के रक्षा मंत्री ने अपने भाषण में सभी 11 देशों से आतंकवाद के हर रूप और तरीके के खिलाफ एकजुट होकर लड़ने की अपील की। रक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि जो लोग आतंकवाद फैलाते हैं, चाहे वे सीमा पार से हमला कराएं, पैसा दें, समर्थन करें या उसका आयोजन करें, उन्हें सजा मिलनी चाहिए और कानून के सामने लाया जाना चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

ईरान-इजराइल विवाद थमने से रुपया बढ़कर 86.11 डॉलर पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान और इजराइल का विवाद थमने के बाद मंगलवार के कारोबारी दिन भारतीय रुपया तेज़ी के साथ खुला। मंगलवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 64 पैसे मज़बूत होकर 86.11 पर पहुंचा, जो सोमवार को 86.75 पर बंद हुआ था। यह 13 मई के बाद रुपया की सबसे बड़ी ओपनिंग तेज़ी रही है। हालांकि जून महीने में अब तक रुपया कुल 0.61 फीसदी गिर चुका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान और इजराइल के बीच पूर्ण सीज़फायर की घोषणा के बाद कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई। इससे भारत जैसे बड़े तेल आयातक देशों को राहत मिली है, जिससे रुपये को भी सहारा मिला।

भारत की अर्थव्यवस्था मजबूतः आरबीआई

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि फरवरी से अब तक रेपो रेट में 100 बेसिस प्वाइंट की कटौती की गई है, जिससे यह 5.5 फीसदी पर आ गया है। इसके अलावा, 6 सितंबर से चरणबद्ध तरीके से 100 बीपीएस की सीआरआर कटौती से करीब 2.5 लाख करोड़ की नकदी बाजार में आएगी। इससे फंडिंग की लागत में कमी आने और कर्ज वितरण में तेजी आने की संभावना है।

पॉपुलर स्कूटर स्कूपी को एक बार फिर भारत में कराया पेटेंट

नई दिल्ली (एजेंसी)। अपनी पॉपुलर स्कूटर स्कूपी को होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने एक बार फिर भारत में पेटेंट कराया है। यही वजह है कि इसके लॉन्च की अटकलें तेज हो गई हैं। हालांकि कंपनी ने फिलहाल कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है, लेकिन पेटेंट कराना इस बात का संकेत है कि होंडा अपने इस रेट्रो लुक वाले स्कूटर को लेकर भारत में गंभीर है और इसके डिज़ाइन अधिकारों को सुरक्षित करना चाहती है। होंडा स्कूपी अपने आकर्षक रेट्रो-मॉडर्न डिज़ाइन के लिए पहचानी जाती है। गोल हेडलाइट, एलईडी इंडिकेटर, स्लीक बॉडी पैनल और यूनिक टेललैंप इसे खास बनाते हैं। इसमें 109.5सीसी का एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन दिया गया है, जो करीब 9बीएचपी की पावर और 9.2एनएम टॉर्क जनरेट करता है। सीवीटी ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ यह इंजन ट्रैफिक में स्मूद राइडिंग और अच्छा माइलेज देने में सक्षम है। इस स्कूटर में एलईडी हेडलाइट, एलसीडी इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, स्मार्ट की, एंटी-थेफ्ट अलार्म, फ्रंट डिस्क और रियर ड्रम ब्रेक, टेलीस्कोपिक फ्रंट फोर्क और रियर मोनोशॉक सस्पेंशन जैसे कई प्रीमियम फीचर्स मिलते हैं, जो इसे सेगमेंट में मजबूती से खड़ा करते हैं। भारत में यदि स्कूपी लॉन्च होती है तो इसका मुकाबला यामाहा फसीनो, सुजुकी एक्सेस 125 और वेस्पा एस जैसे स्टाइलिश स्कूटर्स से होगा। हालांकि यह भी मुमकिन है कि कंपनी सिर्फ अपने डिज़ाइन अधिकारों की सुरक्षा के लिए पेटेंट करा रही हो।

नासिर हुसैन ने शुभमन गिल की कप्तानी पर उठाये सवाल

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने भारतीय टीम के युवा कप्तान शुभमन गिल पर सवाल उठाये हैं। हुसैन ने कहा कि जिस प्रकार की बात विराट कोहली और रोहित शर्मा की कप्तानी में थी। वो बात शुभमन में नहीं दिखी। इसी कारण टीम पांच शतक लगाने के बाद भी हार गयी। उन्होंने ये भी कहा कि गिल की कप्तानी में नियंत्रण की कमी नजर आयी। इस पूर्व कप्तान ने कहा कि उन्हें इस बात पर हैरानी हुई कि शुभमन या किसी भी सीनियर खिलाड़ी ने खुरदरी पिच को लेकर स्पिन ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा से बात नहीं की। उन्होंने कहा, जडेजा से एक बार भी बात नहीं की, शायद एक युवा कप्तान के रूप में संभव नहीं था कि वे अनुभवी स्पिनर के पास जाएं और कहें कि रफ (खुरदरी पिच) है वहां किस प्रकार की गेंदबाजी की जाये। नासिर ने कहा कि भारतीय टीम को हार्दिक पांड्या जैसे ऑलराउंडर की भी खिलाड़ी की जरूरत है, जो तेज गेंदबाजी करे और रन भी बनाए। टीम प्रबंधन ने इंग्लैंड में नितीश कुमार रेड्डी पर भरोसा किया पर शामिल किया शार्दुल ठाकुर को पर इसका लाभ टीम को नहीं मिला। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान ने कहा, स्लिप कॉर्डन और कैचिंग खराब थी, कुछ ऐसा जो भारत ने पिछले दो या तीन सालों में अच्छा किया है। यह मुझे चिंतित करता है, क्योंकि भारत के पास स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर के साथ एक निचला क्रम है और पिछले एक दशक से शानदार रहा है। इंग्लैंड में अभी भी, मुझे लगता है भारतीय टीम उस तेज गेंदबाज ऑलराउंडर की तलाश कर रहे हैं जो गेंदबाजी और बल्लेबाजों दोनो में कुशल हो।

बुमराह को लेकर हमारी नीति नहीं बदली : गौतम गंभीर

लीड्स (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कोच गौतम गंभीर ने कहा है कि तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के लेकर उनकी नीति में कोई बदलाव नहीं आया है और तय कार्यक्रम के अनुसार उन्हें आराम दिया जाएगा। गंभीर ने कहा पहले टेस्ट में टीम की हार को देखते हुए बुमराह को अधिक मैच खेलने को नहीं कहा जाएगा। इस सीरीज से पहले कहा गया था कि वह तीन टेस्ट खेलेंगे और इसमें कोई बदलाव नहीं होगा। बुमराह ही पहले टेस्ट में पांच विकेट लेकर प्रभावी रहे थे, ऐसे में अटकलें लगायी जा रहीं थीं कि अब उन्हें लगातार खेलने को कहा जा सकता है । गौरतलब है कि बुमराह अपने करियर के दौरान चोटों से जूझते रहे हैं और यही वजह है कि उनके कार्यभार प्रबंधन के तहत टीम प्रबंधन ने उन्हें पांच में से तीन टेस्ट मैचों में खिलाने का फैसला किया था। गंभीर ने कहा कि अब भी ये योजना नहीं बदली है। साथ ही कहा कि हमारे लिए बुमराह का फिट रहना ज्यादा जरुरी है क्योंकि आगे काफी क्रिकेट खेलना है और हम जानते हैं कि वह क्या कर सकते हैं। सीरीज शुरू होने से पहले ही यह तय कर दिया गया था कि वह तीन टेस्ट मैच खेलेंगे और यही होगा। दूसरा टेस्ट मैच बर्मिंघम में दो जुलाई से शुरू होगा लेकिन गंभीर ने कहा कि टीम ने अभी तक यह फैसला नहीं किया है कि पांच मैचों की सीरीज में बुमराह अब किन दो मैचों में खेलेंगे। उन्होंने कहा, 'हमने अभी तय नहीं किया है कि वह कौन से दो अन्य टेस्ट मैच खेलेंगे। उनके बिना भी हमारे पास काफी अच्छे गेंदबाज हैं जिनकी क्षमताओं पर भी हमें भरोसा है।

जूपीटर वेगंस का साल 2029 तक 10,000 करोड़ की सालाना कमाई का लक्ष्य

कंपनी का शेयर 372 पर, टारगेट प्राइस 431 रुपए तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। रेलवे और सड़क ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में काम करने वाली कंपनी जूपीटर वेगंस को लेकर एंटीक स्टॉक ब्रोकिंग ने होल्ड रेटिंग जारी रखी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कंपनी के पास तेज़ी से बढ़ने की पूरी तैयारी है और वह साल 2029 तक 10,000 करोड़ की सालाना कमाई का लक्ष्य लेकर चल रही है। फिलहाल कंपनी का शेयर 372 पर कारोबार कर रहा है और इसका टारगेट प्राइस 431 रुपए तय किया गया है, यानी इसमें करीब 16 फीसदी का संभावित मुनाफा हो सकता है। जूपीटर वेगंस का बड़ा हिस्सा रेलवे के फ्रेट वैगनों से जुड़ा है, लेकिन पिछले कुछ महीनों से व्हीलसेट की कमी के कारण ऑर्डर की डिलीवरी में दिक्कतें आ रही हैं। यह समस्या रेलवे की व्हील फैक्ट्री से सप्लाई में कमी के कारण हुई है। कंपनी को उम्मीद है कि यह परेशानी जुलाई 2025 तक खत्म हो जाएगी। अभी कंपनी की कमाई का 60 फीसदी हिस्सा प्राइवेट ग्राहकों से आता है, जहां ऑर्डर की रफ्तार अच्छी बनी हुई है। साथ ही सरकार की तरफ से साल के अंत में नए वैगन टेंडर की उम्मीद भी जताई गई है। जूपीटर की सहायक कंपनी जेईएम ने इंदौर में अपना पहला इलेक्ट्रिक लाइट कमर्शियल वाहन लॉन्च किया है। यह गाड़ी भारत के लॉजिस्टिक सेक्टर को टारगेट करती है। कंपनी ने बताया कि अगले वित्त वर्ष में करीब 500 गाड़ियां बेचने का लक्ष्य है। इसके अलावा 2 टन और 3 टन की दो और गाड़ियां अगले दो साल में लॉन्च होंगी।

सूर्यकुमार यादव की हुई सर्जरी

म्यूनिख (एजेंसी)। भारतीय टी20 क्रिकेट टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव की स्पोर्ट्स हर्निया के लिए जर्मनी के म्यूनिख शहर में सर्जरी हुई है। सूर्यकुमार पिछले कुछ समय से इसके कारण दर्द से परेशान थे। इसी कारण उन्होंने टी20 क्रिकेट के नये अंतरराष्ट्रीय सत्र से पहले सर्जरी कराना ही सही समझा। सूर्यकुमार का इलाज जर्मनी के म्यूनिख में हुआ। स्पोर्ट्स हर्निया से वे परेशान थे, इसी लिए आईपीएल 2025 समाप्त होने के बाद वह सर्जरी के लिए वहां गये। इसकी सर्जरी सफल रही जिसकी तस्वीरें भी सोशल मीडिया में आई हैं। सूर्यकुमार ने सोशल मीडिया में अस्पताल की एक तस्वीर जारी करते हुए कहा कि वह अब सर्जरी से उबरने की प्रक्रिया में हैं। सूर्यकुमार ने सोशल मीडिया में अस्पताल की तस्वीर साझा करते हुए लिखा, लाइफ अपडेट, पेट के निचले दाहिने हिस्से में स्पोर्ट्स हर्निया की सर्जरी सफल रही जिसके बाद अब मैं ठीक हो रहा हूं और बेसब्री से वापस आने का इंतजार कर रहा हूं। सूर्यकुमार ने अभी अपनी वापसी को लेकर कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी है पर उम्मीद है कि वह अगस्त तक पूरी तरह फिट हो जाएंगे और पेशेवर क्रिकेट में लौट जाएंगे। अगस्त तक भारतीय टी20 टीम का कोई कार्यक्रम नहीं है, इससे सूर्यकुमार के बाहर होने से भी भारतीय टीम को कोई नुकसान नहीं होगा। भारतीय टीम को 17 अगस्त से बांग्लादेश के दौरे पर जाना है, जहां सीमित ओवरों की सीरीज होगी। पहले तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज होगी और फिर इतने ही मैचों की टी20 सीरीज होनी है। इसी टी20 सीरीज से सूर्यकुमार वापस आयेंगे।

अमेरिका के साथ व्यापार समझौते में भारत नहीं दिखाएगा जल्दबाजी

दोनों ही पक्ष एक संतुलित समझौता करने के पक्ष में

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका के साथ व्यापार समझौता पूरा करने में भारत कोई जल्दबाजी नहीं दिखाएगा। एक सरकारी अधिकारी ने कहा कि 9 जुलाई की निर्धारित समय सीमा तक व्यापार समझौता करने में भारत जल्दबाजी नहीं दिखा रहा है मगर दोनों पक्ष विभिन्न चुनौतियों के बीच सकारात्मक सोच के साथ एक दूसरे के साथ बातचीत कर रहे हैं। अधिकारी ने कहा कि फिलहाल यह कह पाना मुश्किल है कि 9 जुलाई से पहले अमेरिका के साथ समझौता हो पाएगा या नहीं। मुझे नहीं लगता कि कोई भी देश व्यापार समझौता करने के लिए इतना उतावलापन दिखाएगा। हम अमेरिका के साथ एक लाभकारी और ठोस व्यापार समझौता करना चाहते हैं। दोनों ही पक्ष एक संतुलित समझौता करने के पक्ष में हैं। यह कहीं न कहीं इस बात का इशारा है कि सरकार जवाबी शुल्क के डर से अमेरिका को खुश करने के लिए बिना सोचे-समझे आनन-फानन में कोई समझौता नहीं करेगी। अमेरिका ने भारत सहित कई देशों को उसके साथ व्यापार समझौता करने के लिए 90 दिनों का समय दिया है जिसकी समय सीमा 9 जुलाई को समाप्त हो रही है। इस बारे में एक दूसरे अधिकारी ने कहा कि भारत का हित सर्वोच्च है और वह इससे कभी समझौता नहीं करेगा। डॉनल्ड ट्रंप ने कहा है कि वह जल्द ही अमेरिका के साथ व्यापार करने वाले प्रत्येक देश को बता देंगे कि 9 जुलाई के बाद उन पर कितना शुल्क लगाया जाएगा। ट्रंप के इस बयान पर पहले अधिकारी ने कहा कि उन्हें नहीं मालूम को 2 अप्रैल को हुई शुल्कों की घोषणाओं से यह कितना अलग होगा। अधिकारी ने कहा कि अमेरिका के व्यापार वार्ताकार भी नहीं जानते कि 90 दिनों की समय सीमा बढ़ाई जाएगी या नहीं।

भारतीय शेयर बाजार की तेजी के साथ शुरुआत

सेंसेक्स 800 से ज्यादा अंक चढ़ा, निफ्टी 25200 के पार

मुंबई (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के इजरायल-ईरान युद्ध विराम की घोषणा के बाद भारतीय शेयर बाजार मंगलवार को जोरदार तेजी के साथ खुले। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने सोमवार रात एक चौंकाने वाली घोषणा की। उन्होंने कहा कि ईरान और इज़राइल के बीच अब पूरी तरह और हमेशा के लिए सीज़फायर हो गया है। इससे पहले सोमवार को दोनों प्रमुख बेंचमार्क इंडेक्स निफ्टी-50 और सेंसेक्स गिरावट लेकर बंद हुए थे।

तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 600 से ज्यादा अंक चढ़कर 82,534.61 पर खुला। खुलते ही इसमें तेजी बढ़ गई। यह 922.27 अंक की बढ़त लेकर 82,819.06 पर कारोबार कर रहा था। इसी तरह नैशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 भी मजबूत शुरुआत के साथ 25,179.90 पर खुला। यह 263.45 अंक की बढ़त के साथ 25,235.35 पर कारोबार कर रहा था। वहीं मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के बीच विदेशी निवेशकों की बिकवाली के दबाव में बेंचमार्क निफ्टी और सेंसेक्स सूचकांक में सोमवार को लगभग 0.6 फीसदी की गिरावट आई। बाजार में अनिश्चितता के बावजूद 50 शेयरों वाले इंडेक्स निफ्टी-50 में जून में लगभग 1 फीसदी की वृद्धि हुई है। यह केंद्रीय बैंक के नीतिगत उपायों में ढील और मजबूत घरेलू ग्रोथ संभावनाओं के कारण लगातार चौथे महीने बढ़त में रह सकता है। सेक्टोरल मोर्चे पर एचपीसीएल, आईओसीएल, बीपीसीएल, एमजीएल, पेट्रोनेट एलएनजी और कैस्ट्रॉल इंडिया के नेतृत्व में निफ्टी ऑयल एंड गैस इंडेक्स में 1.13 प्रतिशत की वृद्धि हुई। ब्रोडर मार्केट्स में निफ्टी मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स में 1-1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं इजरायल और ईरान में सीजफायर की घोषणा के बाद एशिया के शेयर बाजारों में 2.5 प्रतिशत तक की बढ़त देखी गई। दक्षिण कोरिया के कोस्पी में 2.5 प्रतिशत की तेजी आई। जबकि ताइवान में 2 प्रतिशत की तेजी आई। जापान के निक्केई में 1 प्रतिशत से अधिक की तेजी आई। हैंग सेंग और स्ट्रेट्स टाइम्स में लगभग 0.7 प्रतिशत की तेजी आई। सीजफायर की खबरों से पहले अमेरिका के शेयर बाजार में सोमवार को मजबूती रही। डॉव जोन्स, नैस्डैक और एसएंडपी 500 में करीब 1 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई।

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच की दोनों पारियों में ऋषभ पंत ने शतक लगाकर बनाया रिकॉर्ड

हेडिंग्ले (एजेंसी)। हेडिंग्ले में भारत-इंग्लैंड के बीच खेले जा रहे पहले टेस्ट के तीसरे दिन भारत के उप कप्तान ऋषभ पंत ने दोनों पारियों में शतक लगाकर एक रिकार्ड अपने नाम कर लिया हैं। भारतीय टीम के उपकप्तान और विकेट कीपर ऋषभ पंत ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि अपने नाम कर ली है। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले टेस्ट 2025 की दोनों पारियों में शतक जड़कर भारतीय क्रिकेट इतिहास में खास जगह बना ली है। पहली पारी में पंत ने शानदार 134 रन बनाए और दूसरी पारी में 118 रन आए। यह कारनामा करने वाले ऋषभ पंत भारत के सातवें बल्लेबाज बन गए हैं जिन्होंने टेस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक लगाया है। ऋषभ पंत से पहले यह उपलब्धि विजय हज़ारे, सुनील गावस्कर (3 बार), राहुल द्रविड़ (2 बार), विराट कोहली, अजिंक्य रहाणे और रोहित शर्मा ने हासिल की थी। हालांकि पंत ने इस सूची में एक खास रिकॉर्ड भी अपने नाम जोड़ा है। ऋषभ पंत इंग्लैंड में टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। ऋषभ पंत एक टेस्ट की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले दुनिया के केवल दूसरे विकेट कीपर हैं। इससे पहले यह रिकॉर्ड जिम्बाब्वे के एंडी फ्लावर के नाम था। जिन्होंने 2001 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 142 और नाबाद 199 रन बनाए थे।

2 जुलाई से एजबेस्टन में खेला जाएगा दूसरा टेस्ट

लीड्स (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच दूसरा क्रिकेट टेस्ट मैच अब अगले माह 2 जुलाई से एजबेस्टन में खेला जाएगा। लीड्स में पहला टेस्ट जीतने के साथ ही मेजबान इंग्लैंड टीम इस सीरीज में 1-0 से आगे हो गयी है। ऐसे में अब बराबरी के लिए भारतीय टीम को दूसरा मैच जीतना होगा। अभी इस मैच में एक सप्ताह का समय है। इससे टीमों को तरोताजा होने के लिए भी पर्याप्त समय मिल जाएगा। भारतीय समय के अनुसार दूसरा टेस्ट दोपहर 3:30 बजे से खेला जाएगा। वहीं तीसरा टेस्ट मैच लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर 10-14 जुलाई के बीच खेला जाएगा। चौथा टेस्ट मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड क्रिकेट ग्राउंड पर 23-27 जुलाई के बीच खेला जाएगा जबकि सीरीज का पांचवां और आखिरी टेस्ट मैच लंदन के केनिंग्टन ओवल में 31 जुलाई से 4 अगस्त के बीच खेला जाएगा। दूसरे टेस्ट में उतरते ही दोनो टीमें अपना 138वां टेस्ट खेलेंगी। दोनों टीमों के बीच अब तक 137 टेस्ट हुए हैं। इसमें भारतीय टीम 35 में जीत मिली है जबकि इंग्लैंड को 52 टेस्ट में जीत मिली है जकि 50 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं।

भारतीय टीम को अगर दूसरा टेस्ट जीतना है तो उसे गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में सुधार करना होगा। भारतीय टीम: शुभमन गिल (कप्तान), साईं सुदर्शन, यशस्वी जायसवाल, करुण नायर, नितीश रेड्डी,मोहम्मद सिराज, जसप्रीत बुमराह, प्रसिद्ध कृष्णा, आकाशदीप, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव, हर्षित राणा।

सोने में 1200 रुपए तक गिरावट, चांदी भी 800 से ज्यादा टूटी

सोने के भाव 98,200 रुपए, चांदी के भाव 1,06,000 रुपए के करीब

नई दिल्ली (एजेंसी)। घरेलू वायदा बाजार में मंगलवार को सोने-चांदी के वायदा कारोबार की शुरुआत में गिरावट देखने को मिल रही है। दोनों के वायदा भाव गिरावट के साथ खुले। मंगलवार को सोने के भाव 98,200 रुपये, जबकि चांदी के भाव 1,06,000 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने चांदी के वायदा भाव नरमी के साथ कारोबार कर रहे हैं। सोने के वायदा भाव की शुरुआत नरमी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 581 रुपये की गिरावट के साथ 98,807 रुपये के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 99,388 रुपये था। इस समय यह कॉन्ट्रेक्ट 1,197 रुपये की गिरावट के साथ 98,191 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 98,807 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 96,422 रुपये के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया। सोने के वायदा भाव ने इस साल 1,01078 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत सुस्त रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई कॉन्ट्रेक्ट 257 रुपये की गिरावट के साथ 1,06,502 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 1,06,759 रुपये था। इस समय यह 793 रुपये की गिरावट के साथ 1,05,966 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। इस समय इसने 1,0,6,502 रुपये के भाव पर दिन का उच्च और 1,0,5,905 रुपये के भाव पर दिन का निचला स्तर छू लिया। चांदी के वायदा भाव ने इस साल 1,09,748 रुपये किलो के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने-चांदी के वायदा भाव में नरमी देखने को मिल रही है। कॉमेक्स पर सोना 3,383.80 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 3,395 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 27.80 डॉलर की गिरावट के साथ 3,367.20 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव ने इस साल 3,509.90 डॉलर के भाव पर ऑल टाइम हाई छू लिया है। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 36.06 डॉलर के भाव पर खुले। पिछला बंद भाव 36.18 डॉलर था। इस समय यह 0.10 डॉलर की गिरावट के साथ 36.08 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

कमिश्नर बीएस जामोद की विशेष पहल पर सौर ऊर्जा की संभागीय कार्यशाला का आयोजन

सौर ऊर्जा की कार्यशाला में दी गई पीएम सूर्यघर और पीएम कुसुम योजना की अमह जानकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में कमिश्नर बीएस जामोद की विशेष पहल पर सौर ऊर्जा की संभागीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रधानमंत्री सूर्यघर योजना तथा प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तकनीकी और सैद्धांतिक पक्षों की विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यशाला में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा कि भविष्य की ऊर्जा आवश्यकता नवकरीण ऊर्जा स्त्रोतों से ही पूरी होगी। सूर्य ऊर्जा का अक्षय भण्डार है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में पिछले 10 वर्षों में हुई तकनीकी प्रगति से इस क्षेत्र में तेजी से विस्तार हुआ है। सौर ऊर्जा प्रदूषण रहित, सुरक्षित और कम लागत में अधिक लाभ देने वाली प्रणाली है। प्रधानमंत्री सूर्यघर योजना और प्रधानमंत्री कुसुम योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार करें। इनके माध्यम से किसान बिजली बिलों से मुक्ति पाने के साथ अतिरिक्त बिजली फीडर में देकर लाभ भी प्राप्त कर रहे हैं। अनुपजाऊ और पड़ती भूमि में बड़े सोलर सिस्टम लगाकर महीने में लाखों रुपए की आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

कलेक्टर ने कहा कि मध्यप्रदेश में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से काम किया जा रहा है। रीवा में अल्ट्रा मेगा सोलर प्लांट से 750 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जा रहा है। रीवा में कई शासकीय कार्यालयों और बड़े संस्थानों में सोलर पावर प्लांट लगाए गए हैं। ऊर्जा विभाग तथा अन्य सभी विभाग मिलकर नवकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए लगातार लोगों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। पीएचई विभाग की नलजल योजनाओं, नगर निगम में स्ट्रीट लाइट, नेशनल हाईवे में स्ट्रीट लाइट तथा सभी नगरीय निकायों में स्ट्रीट लाइट के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग किया जा सकता है। सौर ऊर्जा की योजनाओं की जानकारी के साथ उनमें अनुदान का लाभ, बैंकों से ऋण की सुविधा तथा सभी प्रमुख बातों का उल्लेख करते हुए पम्पलेट के माध्यम से आमजनता तक जानकारी पहुंचाएं।

कार्यशाला में कलेक्टर सीधी स्वरोचिष सोमवंशी ने कहा कि किसान अपना हानि-लाभ जानते हैं। सौर ऊर्जा से सिंचाई पंप तथा घरेलू उपयोग की पूरी बात किसानों को ठीक से समझाने पर योजना का तेजी से क्रियान्वयन होगा। सौर ऊर्जा से मिलने वाला लाभ ही इसका सबसे बड़ा आकर्षण है। घरेलू उपयोग तथा सिंचाई पंप के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग की तकनीकी जानकारी, लागत और लाभ सरल भाषा में आमजनता तक पहुंचाना आवश्यक है। किसान यदि अपनी जमीन पर एक से दो मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र लगाता है तो उसे खेती की तुलना में अधिक आर्थिक आय होने पर ही इसे सफलता मिलेगी। कार्यशाला में एनएसईएफआई के प्रतिनिधियों ने सौर ऊर्जा के संबंध में विस्तार से जानकारी दी।

कार्यशाला में बताया गया कि देश में बिजली की कुल खपत का 21 प्रतिशत सिंचाई के लिए होता है। मध्यप्रदेश में यह प्रतिशत बढ़कर 29 है। किसानों के सिंचाई पंप यदि सौर ऊर्जा से चलने लगें तो इस बिजली का अन्य क्षेत्र में उपयोग संभव होगा। सौर ऊर्जा से चलने वाले सिंचाई पंपों में वोल्टेज कम होने, बिजली गोल होने और लाइन लॉस भी शून्य होगा। किसानों को सिंचाई के लिए किसी तरह का बिल नहीं देना पड़ेगा। किसान को तीन हार्सपावर तक के सोलर पंप लगाने पर लगभग 90 प्रतिशत की छूट मिलेगी। किसान केवल 9500 रुपए देकर सोलर सिंचाई पंप लगा सकते हैं। सौर ऊर्जा उत्पादन के दो मेगावाट के संयंत्र के लिए 7.5 एकड़ जमीन की आवश्यकता होगी। इसकी लागत लगभग 7 करोड़ रुपए है जिसमें लगभग 65 प्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा। इसमें संयंत्र स्थापित करने के बाद बिजली ग्रिड में देने के लिए 25 साल का अनुबंध करना आवश्यक होगा। इससे हर महीने तीन से चार लाख रुपए की आमदनी होगी। बैंक लोन लेने पर 12 साल में ऋण की राशि अदा हो जाती है और लगभग 20 साल तक नाममात्र के खर्चे पर तीन से चार लाख रुपए महीने की आमदनी होती है। इसे बिजली ग्रिड से पाँच किलोमीटर के दायरे में ही स्थापित करने की सुविधा है। कार्यशाला में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों तथा पीएम सूर्यघर एवं पीएम कुसुम योजना की बिन्दुवार जानकारी दी गई।

बैठक में स्टेट बैंक के प्रतिनिधियों ने सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने के लिए दी जा रही ऋण और अनुदान सुविधा की जानकारी दी। कार्यशाला में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी अंशुमान राय, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत रीवा मेहताब सिंह गुर्जर, अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले, संयुक्त कलेक्टर सिंगरौली संजीव पाण्डेय, संयुक्त कलेक्टर मैहर आरती सिंह, सभी संभागीय तथा जिला अधिकारी उपस्थित रहे।

सतना में मालगाड़ी से टकराई कार, परिवार बाल-बाल बचा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के कोलगवां थाना क्षेत्र के मारुति नगर स्थित गेटविहीन रेलवे क्रॉसिंग पर बुधवार शाम एक मालगाड़ी की कार से टक्कर हो गई। कार में सवार संजय शुक्ला, उनकी पत्नी सपना, और बेटी अंशिका सौभाग्य से सुरक्षित बच गए। टक्कर के कारण कार का बायां हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया, लेकिन ट्रेन चालक के इमरजेंसी ब्रेक लगाने से बड़ा हादसा टल गया। घटना उस समय हुई जब संजय शुक्ला अपनी कार में परिवार के साथ मुख्यारगंज से मारुति नगर स्थित अपने घर जा रहे थे। बारिश के बीच, जैसे ही कार गेटविहीन रेलवे क्रॉसिंग पर पहुंची, संजय ने देखा कि स्टेशन की ओर से एक मालगाड़ी का इंजन बिरला सीमेंट साइडिंग की ओर बढ़ रहा है। इंजन को देखकर संजय घबरा गए, और उनकी कार बंद हो गई। इंजन चालक ने तुरंत इमरजेंसी ब्रेक लगाया, लेकिन तब तक इंजन का अगला हिस्सा कार के बाएं हिस्से से टकरा गया।

कार में लगी आग, फायनेंस कंपनी पर लगे गंभीर आरोप

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना के पतेरी पावर हाउस परिसर में एक टाटा सफारी कार में अचानक आग लग गई, जिससे कार पूरी तरह जलकर खाक हो गई। बुधवार रात इस घटना का वीडियो सामने आया। सूचना मिलते ही सिविल लाइन पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। कार के मालिक, धवारी निवासी विकास गर्ग ने एसपी आशुतोष गुप्ता को ज्ञापन सौंपकर फायनेंस कंपनी पर गंभीर आरोप लगाए। विकास ने बताया कि केवल एक महीने की किस्त बकाया होने के कारण फायनेंस कंपनी ने 23 जून को उनकी टाटा सफारी को जब्त कर लिया था। उनका दावा है कि कंपनी ने कार को अनधिकृत रूप से पतेरी पावर हाउस परिसर में छिपाकर रखा। विकास ने आरोप लगाया कि फायनेंस कंपनी के कर्मचारियों की मनमानी और गैर-जिम्मेदाराना रवैये के कारण उनकी कार जल गई, जिससे उन्हें भारी आर्थिक नुकसान हुआ। एसपी आशुतोष गुप्ता ने मामले की गहन जांच के लिए कोतवाली पुलिस को निर्देश दिए हैं।

पुराने बस स्टैंड में आसामाजिक तत्वों का आतंक

बस स्टैंड चौकी में शाम होते ही बंद हो जाता है ताला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के पुराने बस स्टैंड पर हर शाम आसामाजिक तत्वों का जमावड़ा लग जाता है।

चौकी प्रभारी के शाम होते ही ताला मारकर गायब होने से इन आसामाजिक तत्वों की बल्ले-बल्ले हो जाती है। यात्री प्रतीक्षालय में बैठकर ये लोग नशा करते हैं, यात्रियों से गाली-गलौज करते हैं और महिला यात्रियों पर अभद्र टिप्पणियां करते हैं। वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि चौकी बंद रहती है और प्रभारी मौके पर मौजूद नहीं होते, जिससे यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है।

रीवा पुलिस की अवैध नशे और हत्या के मामले में बड़ी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा पुलिस ने अवैध मेडिकल नशे और हत्या के मामले में दो अलग-अलग अभियानों में सफलता हासिल की। एसपी विवेक सिंह ने बताया कि चोरहटा पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर 23 लाख रुपये की 26 पेटी नशीली टैबलेट जब्त की और एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई शुरू की। वहीं, गोविंदगढ़ पुलिस ने हत्या के मामले में 10 हजार रुपये के इनामी फरार आरोपी को गिरफ्तार किया। एसपी ने कहा कि नशे और अपराध के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

ट्रक और पिकअप वाहन की आमने-सामने टक्कर

सड़क हादसे में युवक की मौत, चालक और खलासी फरार

बदवार सोलर प्लांट के पास हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के गुढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत बदवार सोलर प्लांट के समीप बीती रात ट्रक और पिकअप वाहन की आमने-सामने टक्कर में एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान अमित साकेत, निवासी ग्राम कुबरी, जिला सीधी के रूप में हुई है। घटना के बाद चालक और खलासी वाहन छोड़कर फरार हो गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मृतक को पिकअप से बाहर निकाला और पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भेजा। अमित के दोस्त सुनील चौधरी ने बताया कि अमित बीती रात अपने चालक और खलासी के साथ पिकअप में सवार होकर सीधी से मनगवां सामान लोड करने जा रहा था। टनल क्रॉस करने के बाद बदवार सोलर प्लांट के पास सामने से आ रहे ट्रक से पिकअप की टक्कर हो गई, जिससे अमित की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। सुनील चौधरी ने बताया कि पिकअप में दो या तीन लोग सवार थे, लेकिन चालक और खलासी घटना के बाद फरार हो गए और उन्होंने किसी को सूचना भी नहीं दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बोलेरो की टक्कर से एक युवक की मौत, दूसरा घायल

रीवा के सगरा थाना क्षेत्र के रायपुर करचुलियान मोड़ के समीप बीती रात एक भीषण सड़क हादसा हो गया। बाइक पर सवार होकर रीवा की ओर आ रहे दो दोस्त, संदीप साकेत निवासी ग्राम हरदी, थाना बैकुंठपुर और उनका साथी, आवारा मवेशी से टकरा गए। टक्कर के कारण दोनों युवक बाइक सहित सड़क पर गिर गए। इसी दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार बोलेरो ने संदीप को रौंद दिया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक घायल हो गया। हादसे के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मृतक के शव को रीवा के संजय गांधी अस्पताल भेजा। वहीं घायल युवक को प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। पुलिस ने अज्ञात बोलेरो वाहन के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है।

नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पीएम जवाहर नवोदय विद्यालय सिरमौर में शिक्षा सत्र 2026-27 में कक्षा 6 में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 31 मई से प्रारंभ हो चुकी है। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई निर्धारित की गई है। इच्छुक विद्यार्थी किसी भी ऑनलाइन सेंटर अथवा मोबाइल के माध्यम से प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन कर सकता है। इस संबंध में विद्यालय के प्राचार्य मनीष तिवारी ने बताया कि विद्यार्थी को रीवा अथवा मऊगंज जिले के शासकीय विद्यालय अथवा मान्यता प्राप्त अशासकीय विद्यालय में कक्षा 5 में अध्ययरत एवं रीवा अथवा मऊगंज जिले का निवासी होना चाहिए। विद्यार्थी ने कक्षा 3 और 4 की निरंतर पढ़ाई शासकीय अथवा मान्यता प्राप्त अशासकीय विद्यालय से पूर्ण शिक्षण सत्र में उत्तीर्ण की हो तथा वर्तमान में कक्षा 5 में अध्ययनरत हो। विद्यार्थी 29 जुलाई तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। कक्षा में आगामी सत्र में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा 13 दिसम्बर को रीवा और मऊगंज जिले के सभी विकासखण्ड मुख्यालय में आयोजित की जाएगी। इसके आधार पर तैयार मेरिट सूची के अनुसार विद्यार्थियों को कक्षा 6 में प्रवेश दिया जाएगा। इस संबंध में अन्य जानकारियाँ और विवरण नवोदय डॉट जीओभी डॉट इन लिंक पर भी प्राप्त की जा सकती हैं। इसका आवेदन पत्र वेबसाइट सीबीएसईआईटीएमएस डॉट आरईआईएल डॉट जीओभी डॉट इन पर किया जा सकता है।

हाईकोर्ट की अनोखी सजा, सतना टीआई को लगाने होंगे 1000 फलदार पौधे

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने सतना शहर कोतवाली के थाना प्रभारी को एक अनोखी सजा सुनाई है। नाबालिग से दुराचार के मामले में पीड़िता को नोटिस तामील न कराने की लापरवाही पर जस्टिस विवेक अग्रवाल और जस्टिस अवनीन्द्र कुमार सिंह की खंडपीठ ने टीआई को 1 जुलाई से 31 अगस्त 2025 तक चित्रकूट क्षेत्र में आम, जामुन, महुआ और अमरूद जैसे 1000 फलदार पौधे लगाने का आदेश दिया। कोर्ट ने टीआई को पौधों की एक साल तक देखभाल करने और उनके फोटो व जीपीएस लोकेशन कोर्ट में जमा करने का निर्देश दिया है। अगली सुनवाई 16 सितंबर 2025 को होगी, जिसमें सतना एसपी को पौधों की स्थिति की रिपोर्ट पेश करनी होगी।

नगर पालिक निगम रीवा की मेयर-इन-काउंसिल बैठक में लिये गये कई निर्णय

ऐतिहासिक घंटाघर रेनोवेशन और रोड रेस्टोरेशन के लिए कार्ययोजना के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर पालिक निगम रीवा की मेयर-इन-काउंसिल बैठक महापौर अजय मिश्रा (बाबा) की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में निगम आयुक्त सौरभ संजय सोनवणे और एमआईसी सदस्य नजमा बेगम, नीतू अशोक पटेल, रमा दुबे, रवि तिवारी, मनीष नामदेव, गुलाम अहमद, गायत्री लखन खण्डेलवाल, सूफिया सहफूज खान, और आरती बक्सरिया उपस्थित रहे।

प्रमुख निर्णयः वार्ड 07 में अटल पार्क के संचालन व संधारण के लिए निविदा स्वीकृत। 8 सार्वजनिक और 6 सामुदायिक शौचालयों के निर्माण को मंजूरी। पीएम आवास योजना के 116 हितग्राहियों की सूची का अनुमोदन। न्यू बस स्टैंड के पास 100 सीटर रैन बसेरा निर्माण की स्वीकृति। पीएम आवास योजना के 2 एमआईजी फ्लैट की निविदाओं को मंजूरी। गोल क्वार्टर, एसएएफ साइट में दुकानों और कार्यालय इकाई का मूल्य निर्धारण। स्ट्रीट लाइटों के संचालन व संधारण की सैद्धांतिक स्वीकृति। 6 प्रकरणों में लीज नवीनीकरण की मंजूरी। सहायक ग्रेड-3 नवीन कुमार भारतीया के चिकित्सा देयक की स्वीकृति।

महापौर ने ऐतिहासिक घंटाघर के सौंदर्यीकरण और रेनोवेशन के लिए कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए, इसे शहर की सांस्कृतिक पहचान बताते हुए। साथ ही, सीवरेज रेस्टोरेशन कार्यों को तत्परता से करने और जनता की शिकायतों से बचने के लिए सतर्कता बरतने को कहा।

रीवा निगम आयुक्त ने सीवरेज और जलप्रदाय कार्यों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। निगम आयुक्त सौरभ संजय सोनवणे ने अमृत 2.0 योजना के तहत सीवरेज और जलप्रदाय कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। रेस्टोरेशन कार्यों में नागरिकों की शिकायतों का तत्काल समाधान करने, उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री का उपयोग करने, और सड़कों को मोटरेबल बनाए रखने के निर्देश दिए। पीडीएमसी टीम को अधूरे कार्यों में सुधार के लिए फटकार लगाई गई। जलप्रदाय टीम को पाइपलाइन बिछाने के बाद त्वरित रेस्टोरेशन, गंदे पानी की शिकायतों का समाधान, और अवैध नल कनेक्शनों पर सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए गए।

पेयजल प्रोजेक्ट में गति लाने, पाइपलाइन तोड़ने वाले संविदाकारों पर पेनाल्टी लगाने, और विवेकानंद, बिछिया, एजी कॉलेज एसटीपी व झलबदरी तालाब के कार्य 15 जुलाई तक पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में कार्यपालन यंत्री राजेश सिंह, एचके त्रिपाठी, सहायक यंत्री एसएन द्विवेदी, राजेश मिश्रा, पीडीएमसी, सीएमआर, सहज कंस्ट्रक्शन के प्रतिनिधि और संविदाकार उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683

प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।

ओढ़की टोल प्लाजा में बदमाशों का तांडव, मारपीट कर की लूट

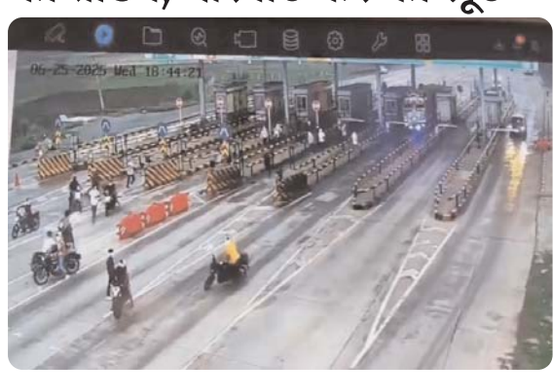

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना जिले के नेशनल हाईवे पर स्थित ओढ़की टोल प्लाजा पर बुधवार देर शाम नकाबपोश बदमाशों ने जमकर उत्पात मचाया। करीब 15 बाइकों पर सवार 30 से 35 अपराधी, जिन्होंने अपने चेहरे ढके थे और बाइक की नंबर प्लेट पर काली ग्रीस लगाकर पहचान छिपाई थी, टोल प्लाजा पर धावा बोल दिया। बदमाशों ने टोल स्टाफ के साथ मारपीट की, टोल बूथ, बैरियर, कंप्यूटर सिस्टम और अन्य उपकरणों में तोड़फोड़ की साथ ही काउंटर से नकदी भी लूट ली। इस दौरान भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग की संपत्ति और राजस्व को भारी नुकसान पहुंचा। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, शाम ढलते ही हमलावरों ने अचानक हमला बोला, जिससे टोल स्टाफ और वहां मौजूद लोगों में दहशत फैल गई। बदमाशों ने टोलकर्मियों पर जानलेवा हमला किया, जिसमें स्टाफ को गंभीर चोटें आईं। घटना का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है, जिसके आधार पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस सीसीटीवी और अन्य सबूतों के जरिए हमलावरों की पहचान करने का प्रयास कर रही है।